॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः॥

सरस-भजनावली

त्वमेव माता च पिता त्वमेव
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव
त्वमेव सर्वं मम देवदेव॥

बजरंगलाल सोनी

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

नम्र निवेदन

मानव-जीवनमें संगीतका विशेष स्थान है। संगीतके माध्यमसे जो बात कही जाती है, वह मनुष्यके हृदयमें सहजतासे उतर जाती है। इसलिये अपनी शिक्षाओंको, उपदेशोंको जन-जनके हृदयतक पहुँचानेके लिये सन्तोंने संगीतमय पदोंकी रचना की। उनके द्वारा रचित पदोंमें हृदय-परिवर्तन करनेकी, भगवद्भाव जाग्रत् करनेकी विलक्षण शक्ति प्रत्यक्ष देखनेमें आती है। इसी लक्ष्यको ध्यानमें रखते हुए प्रस्तुत पुस्तक '**सरस भजनावली**' पाठकोंकी सेवामें प्रस्तुत की जा रही है।

जिन लोगोंने परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराजका सत्संग सुना है, उन्हें श्रीबजरंगलालजी सोनीका परिचय देनेकी आवश्यकता नहीं है। श्रीस्वामीजी महाराजके प्रवचनोंके बीचमें अथवा अन्तमें श्रीसोनीजीके द्वारा गाये हुए पद श्रोताओंको मंत्रमुग्ध कर देते थे। स्वयं श्रीस्वामीजी महाराज श्रीसोनीजीके द्वारा रचित व गाये हुए पदोंको सुननेकी रुचि रखते थे। प्रस्तुत पुस्तकमें श्रीबजरंगलालजी सोनीके द्वारा स्वरचित तथा अनेक सन्तों, भक्त-कवियोंके द्वारा रचित सर्वोपयोगी विविध पदोंका संकलन किया गया है। इन पदोंमें भगवत्प्रेम, ज्ञान, सत्संग, सन्त-महिमा आदिके पद तो आये ही हैं, साथ-साथ अनेक सामयिक पद भी आये हैं, जिनमें भ्रूणहत्या आदि सामाजिक बुराइयोंपर कुठाराघात करते हुए युवा पीढ़ीको सन्मार्गपर चलनेकी प्रेरणा दी गयी है। आशा है, पाठक इन पदोंमें सन्निहित भावोंसे लाभ उठायेंगे।

श्रीरामनवमी
वि०सं० २०७०

निवेदक—
राजेन्द्र कुमार धवन

सरस-भजनावली
पद सूची

===::0::===



॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः॥

सरस भजनावली
(भाग-१)

वन्दन

गौरी पुत्र गणेश को वंदौ बारंबार।
विघ्न मिटे संकट कटे मंगल होत अपार॥
लंबोदर भुज चार हैं नेत्र तीन रँगलाल।
नाना बरन सुवेष हैं मुख प्रशन्न शशि भाल॥

ऋषि-मुनि-वन्दन

सृष्टि के आदि ऋषिवर

आदि सृष्टि के सनकादिक रिषि चार।
सनक सनन्दन सनातन सनत्कुमार॥

सप्त ऋषिवर

कश्यप अत्रि वसिष्ठ रिषि कौशिक रिषि विख्यात।
गौतम रिषि जमदग्नि रिषि भरद्वाज एहि सात॥
ज्योतिर्मण्डल गगन महँ करै सप्त रिषि वास।
देते ग्यान मुमुक्षु को संशय भ्रम करि नाश॥

नौ योगेश्वर

कवि हरि अन्तरिक्ष प्रबुद्ध पिपिलायन।
आविर्होत्र द्रुमिल चमस करभाजन॥
वंदउँ रिषिवर वृन्द निपुन विश्व कल्याण हित।
अनासक्त निर्द्वन्द्व करुणित मुदित प्रशान्तचित॥

(१)

प्रभुजी थाँने कोटि-कोटि सत नमन॥टेर॥
कोटि अनन्त सन्त हैं थाँरा, सबने कोटिन नमन्॥1॥
कोटि अनन्त भक्त हैं थाँरा, सबने कोटिन नमन्॥2॥
कोटि अनन्त है रिषि मुनि थाँरा, सबने कोटिन नमन्॥3॥

कोटि अनन्त शास्त्र है थाँरा, सबने कोटिन नमन्॥4॥
कोटि-कोटि अवतार है थाँरा, सबने कोटिन नमन्॥5॥
कोटि अनन्त नाम है थाँरा, सबने कोटिन नमन्॥6॥
कोटि अनन्त रूप है थाँरा, सबने कोटिन नमन्॥7॥
कोटि अनन्त है लीला थाँरी, सबने कोटिन नमन्॥8॥
कोटि अनन्त धाम है थाँरा, सबने कोटिन नमन्॥9॥
कोटि अनन्त है तीरथ थाँरा, सबने कोटिन नमन्॥10॥
कोटि अनन्त है मन्दिर थाँरा, सबने कोटिन नमन्॥11॥
कोटि-कोटि श्रीविग्रह थाँरा, सबने कोटिन नमन्॥12॥
कोटि अनन्त लोक है थाँरा, सबने कोटिन नमन्॥13॥
कोटि अनन्त सृष्टि है थाँरी, सबने कोटिन नमन्॥14॥
कोटि अनन्त शक्ति है थाँरी, सबने कोटिन नमन्॥15॥
कोटि अनन्त है रचना थाँरी, सबने कोटिन नमन्॥16॥
कोटि अलौकिक गुण-गण थाँरा, सबने कोटिन नमन्॥17॥
कोटि अनन्त प्रभाव है थाँरा, सबने कोटिन नमन्॥18॥
कोटि अनन्त है करुणा थाँरी, सबने कोटिन नमन्॥19॥
कोटि अनन्त है किरपा थाँरी, सबने कोटिन नमन्॥20॥
कोटि विश्व थाँरै रोम-रोम में, सबने कोटिन नमन्॥21॥

प्रार्थना

(२)

सुमति दो हम सबको भगवान।
सब मिल-जुलकर करे प्रेम से, आपहि का गुन-गान॥टेर॥
घर-घर में गैया पालन हो, दूध दही की खान।
मात-पिता गुरु पूज्यजनों का, हो आदर सम्मान॥
घर-घर हो रामायण गीता, श्री भागवत पुराण।
गाँव-गाँव पुर शहर-शहर हो, गीताप्रेस दुकान॥
भाषा वेष जीविका अपनी, शुद्ध खान अरु पान।

जाति-पांति कुल धर्म समझ कर, कन्या का हो दान॥
चारौं बरन करै नित पालन, अपना धर्म प्रधान।
सेवा सबकी करै लखै प्रभु, सबमें व्याप्त समान॥
पतिव्रता नारी हो घर-घर, हो सपूत सन्तान।
राम-राज्य उत्सव हो नित प्रति, भव-भयसे हो त्रान॥
आप हमारे मात-पिता गुरु स्वामी प्रियतम प्रान।
ऐसी कृपा दृष्टि बरसा दो, सब पर कृपानिधान॥

गुरुजन-वंदन

(३)

हे मेरे गुरुजन श्रेष्ठ, सत-सत वँदन करौं॥
मेरा जनम-मरन दिया मेट, कौटिन्ह नमन करौं॥
हे मेरे स्वामी श्रेष्ठ, सत-सत वँदन करौं।
मेरा भव-दुख दीन्हा मेट, कौटिन्ह नमन करौं॥टेर॥
रोम-रोम में भगवद्गीता, आत्मज प्रभु के ज्येष्ठ ॥ कौ०१॥
बाहर तो व्यवहार लखावै, भीतर में निश्चेष्ठ॥ कौ०२॥
ना कोइ आश्रम कुटी छवाई जिन्ह चरनन में बैठ॥ कौ०३॥
ना कोइ मूँड़े चेला-चेली, मूँड़ा कलेजा ठेट॥ कौ०४॥
ना कोई दीन्ही कंठी माला, ना कोई लीन्ही भेंट॥ कौ०५॥
ना साधु न गृहस्थ बनाया, ना कोई बदली फेंट॥ कौ०६॥
ना भटकाया पर्वत जंगल, पहुँचाया घर ठेट॥ कौ०७॥
जो था झूठ असत का नाता, कर दिया मटिया मेट॥ कौ०८॥
युगो-युगों का दरिद्र मेटा, सेठों के बड़े सेठ॥ कौ०९॥
संजीवनी-सुधा रस प्यावै, पीवौं भर-भर पेट॥ कौ०१०॥

हमारे सर्वस्व

(४)

हरिः हमारे मात-पिता गुरु हरि ही जीवन ज्योती॥टेर॥
हरि ही मालिक हरि ही पालिक, हरि ही घालै रोटी।

हरी-नाम अनमोल रतन है, झूठे मानिक मोती ॥1॥
हरि की चरचा खारी-खरी है, दूजी चरचा खोटी।
हरी-भजे बिन शांति नहीं है, जतन करौ चाहे कौटी ॥2॥
हरि-भजे सोइ जाग्रत है नर, सारी दुनियाँ सोती।
सतसँग भजन करै जग-सेवा, यही कमाई मोटी ॥3॥
तीन लोक अरू भुअन चतुर्दस, हरि ही सबकी चोटी।
धन्य-धन्य जिस घर मन्दिर में, हरि की पूजा होती ॥4॥

(५)

नाथ थाँने कोटिन-कोटिन नमन।
जो होग्या जो आगे होसी, सब सन्ताँ ने नमन ॥1॥
जो होग्या जो आगे होसी, सब भगताँ ने नमन ॥2॥
और न जाणूँ अस्तुति पूजा, और न जाणूँ भजन ॥3॥
रहूँ निरखतो किरपा थाँरी, निरखत रेहवूँ मगन ॥4॥
ना जाणूँ सतसंग की महिमा, ना जाणूँ परबचन ॥5॥
ना कोइ चोखा गुण म्हारे में, ना कोइ चोखा लखण ॥6॥
ज्यूँ थे राखो त्यूँ ही रहस्यूँ, पड्यो हूँ थाँरे सरण ॥7॥
ज्यूँ बुलवास्यो त्यूँ ही बोलूँ, म्हारो कुछ नहिं कथन ॥8॥

प्रभु से अपनापन

(६)

हम जैसे भी हैं आपके हैं, आपके रहेंगे ॥टेर॥
लायक हैं नालायक आखिर, भोले बच्चे आपके।
आपके आँचल की छत्तरछाया में रहेंगे ॥1॥
पूत हैं कपूत आखिर, पूत तो हैं आपके।
आपके चरनों की रज में लेटते रहेंगे ॥2॥
क्या करना है क्या नहिं करना, हम मूरख क्या जाने।
जैसे नाच नचाओ हरदम, नाचते रहेंगे ॥3॥

अवगुन सबही भरे पड़े हैं, पल्ले पड़ गये आपके।
अब काहे की चिन्ता है, क्यों मुँह लटकाय रहेंगे॥4॥
औरों को समझाने की यह, आदत बुरी न छूटे।
सबकी रक्षा आप करो हम पीछे क्यों रहेंगे॥5॥
पलभर भूले नहीं आपको, ऐसी मन में आवे।
जानो हो भीतर की फिर भी, पुकारते रहेंगे॥6॥
आप ही श्रीमुख से बोले, मेरे ही तुम अंश हो।
अब तो आप बुलाओ जैसे, बोलते रहेंगे॥7॥

(७)

म्हे हाँ जीस्या ही आपका हाँ, आपका ही रेस्याँ॥टेर॥
लायक हाँ नालायक आखर, भोला टाबर आपका।
आपका आँचल की छत्तरछाया ही में रेस्याँ॥1॥
पूत हाँ कपूत आखर, पूत तो हाँ आपका।
आपका चरणाँमें हरदम, लोट पोट रेस्याँ॥2॥
के करणूँ है के नहिं करणूँ, म्हे मूरख के जाणाँ।
जीयाँ नाच नचास्यो बीयाँ, नाचता ही रेस्याँ॥3॥
ओगण सारा भर्‌या पड्‌या हैं, पांने पड़ग्या आपके।
सबकी चिन्ता आपने है, म्हे क्यूँ सिरपर लेस्याँ॥4॥
औराँने समझाणें री या, खोटी लत ना छूटे।
सबकी रक्षा आप करो तो, म्हे क्यूं न्यारा रेस्याँ॥5॥
पल भर भूलाँ नहीं आपने, ईसी मन में आवे।
जाणों हो भीतर की तो भी, पुकारता ही रेस्याँ॥6॥
आप ही श्रीमुख से बोल्या, म्हारा ही थे अंश हो।
अब तो आप बुलास्यो जीयाँ, बोलता ही रेस्याँ॥7॥

गायक और लायक

(८)

जब राम-गुन गाया नहीं, गायक हुआ तो क्या हुआ।

गोबिन्द गुन गाया नहीं, गायक हुआ तो क्या हुआ।
प्यारे का गुन गाया नहीं, गायक हुआ तो क्या हुआ।
निज प्रभु का गुन गाया नहीं, गायक हुआ तो क्या हुआ।
माँ-बाप मन भाया नहीं, लायक हुआ तो क्या हुआ॥टेर॥
पढ़ सुन के बातें सीख कर औरौं को शिक्षा दे रहे।
अपना सुधार नहीं किया शिक्षक हुआ तो क्या हुआ॥1॥
घर छोड़ कर त्यागी बने, छोड़ी न कंचन कामिनी।
बैराग्य भीतर में नहीं, साधू हुआ तो क्या हुआ॥2॥
वोटों से बाजी जीत कर, जनता का शोषण जो करे॥
पुतला है वह तो पाप का, नेता हुआ तो क्या हुआ॥3॥
गउओं की रक्षा के लिए जो, खर्च धन करता नही॥
करूणा हृदय भीतर नहीं, धनपति हुआ तो क्या हुआ॥4॥
मल-मलके तन को खूब धोया, घिस के साबुन से सदा।
मन-मैल को धोया नहीं, सुन्दर हुआ तो क्या हुआ॥5॥

प्रियवर से वार्तालाप

(९)

प्यारे मदन गोपाल, मेरे मीठू नन्दलाल।
तेरे बिना झूठौ है, जगत जंजाल॥टेर॥
तेरेही सब टाबर टौली, तेरौ ही घरबार।
जहाँ-तहाँ मैं रहवौं प्यारे, तेरौ ही दरबार॥1॥
तेरी ही परसादी पावौं, तेरौ ही जल पीवौं॥
तेरे खातिर स्वास लेवौं, तेरे खातिर जीवौं॥2॥
तेरे खातिर सोऊँ प्यारे, तेरे खातिर जागूँ।
तेरे खातिर ऊठूँ-बैठूँ, तेरे खातिर भागूँ॥3॥
तेरे खारित आऊँ प्यारे, तेरे खातिर जाऊँ।
तेरे ही भगतों में बैठ, तेरा गीत गाऊँ॥4॥

(१०)

तेरे क्या आवैगी काम।
श्रद्धा प्रेम-भक्ति हमको, दे दो प्यारे श्याम॥टेर॥
ध्रुव जैसा विश्वास दे दो, संतन का नित संग।
अपनौ जान शरण में, हमको रख लो हे श्रीरंग।
तेरी लागे ना छदाम॥1॥
बढ़ै तुम्हारे चरनन में नित, नया-नया अनुराग।
छूटि जाय सब जग के बंधन, उमड़ पड़े बैराग॥
मेरी पकड़े रहौ लगाम॥2॥
दृष्टि ऐसी दे दो तुमको, देखौं सबही ठौर।
तुम बिन इस संसार में कोउ, नजर न आवै और।
पावौं चरनन में विश्राम॥3॥

गीता-स्तुति

(११)

जय-जय जननी जगत वंदिनी, जय-जय भगवद्गीता॥टेर॥
गनपति लिखित कथित केशव मुख, वेदव्यास भनीता।
श्रीमूरति नर-नारायण की, युग-युग काल अतीता॥1॥
साधककी संजीवनी बूटी, बड़ भागी जन पीता।
समता बोध प्रेम सोइ पावै, मुक्त होइ वह जीता॥2॥
तत्वविवेचनि, भव दुख मोचनि, उज्ज्वल परम पुनीता।
योग साँख्य अरु शरणागति की, परमानन्द सरीता॥3॥
दरपन शुचि सिद्धान्त सत्य की, पक्ष वाद सौं रीता।
अर्थ भाव का अंत न पावै, नित-नित नव दरसीता॥4॥

हरि-मुख की वाणी गीता

(१२)

जय-जय जगजननी भगवद्गीता, हरि-मुख की वाणीं॥टेर॥
जितने धर्म ग्रंथ सबकी, सिरमौर महारानी।

जगत–गुरु श्रीकृष्ण बड़ै ठाकुर की ठकुराणी ॥1 ॥
हिन्दु–मुस्लिम बौध इसाई, हितकर सब मानी।
मानव मात्र लेत शिक्षा, तुम गुरु माता ग्यानी ॥2 ॥
जो नर ऐसा गर्व करै हम हैं हिन्दुस्तानी।
भगवद्गीता पढ़ी नहीं कैसा हिन्दुस्तानी ॥3 ॥
बिछुड़ गया प्रभु से यह प्राणी, हुई बड़ी हानी।
गीता अमरित पान करै तो, होत महरवानी ॥4 ॥

प्यारी–प्यारी गीता

(१३)

हे प्यारे स्याम सुन्दर, हे मनमोहन गिरधारी।
ये कैसी अमरित वाणी तेरी, गीता प्यारी–प्यारी ॥टेक ॥
स्वारथमें हम होय रहे अन्धे, मोह पाश के डारत फन्दे।
करमयोग दरशाया, ये सर्वभूत हितकारी ॥1 ॥
हो रहे हम तो देह–अभिमानी, बन रहे झूठे आतमग्यानी।
चेतन रूप लखाया, ये दूर किया भ्रम भारी ॥2 ॥
भटक रहे हम अंश तुम्हारे, डूबत जाके पकड़ सहारे।
पाई बड़ी विलक्षण, ये शरणागति तुम्हारी ॥3 ॥

गीता–जयन्ती

(१४)

हे अंतरयामी! ठहराओ रथ को दोउ दल बीच में ॥टेर ॥
दीन्ह हरीके हाथ में निज, बागडौर सँभलाय।
हाँकन लागे घोड़े प्रभुजी, अर्जुन यों बतलाय ॥जी०1 ॥
देखो निज जन हुआ पार्थके, मोह जनित संताप,
इन्ह को मार सुखी नहिं होऊँ, लगै मोहि बड़ पाप ॥जी०2 ॥
बाणौं की बौछार से यह, मर जायेंगे वीर ॥
शस्त्र हाथ से छूटन लागे, कंपित होय शरीर ॥जी०3 ॥
बैठे रथ के मध्य कुन्तिसुत, तजे धनुष अरु बाण।

शरणागत हो करै प्रार्थना, करौ नाथ कल्याण ॥जी०4 ॥
मैं हूँ शिष्य आपका प्रभुजी, गुरुजन आप हमार।
कछु भी मैं करना नहिं जानू, धर्म-अधर्म विचार ॥जी०5 ॥
जगत-गुरु श्रीकृष्णचन्द्र जो, सबके प्रियतम प्रान।
अगहन की एकादशी को, प्रगटे गीता-ग्यान ॥जी०6 ॥

(राजस्थानी लोक-गीत)

(१५)

हर-हर बैठया हरिजी, रथमें आगे आय,
कुन्तीसुत सूँ बाताँ हरि की होय रही ॥1 ॥
हर-हर पकड़ी हरिजी, घोड़लाँ री लगाम,
एक हाथ में चाबुक धारण कर लीन्हा ॥2 ॥
हर-हर हाँकण लाग्या, घोड़लाँ ने घनश्याम,
निज भगताँ री आग्या पालण कर रहया ॥3 ॥
हर-हर रोक्या रथनें, दोय सेना रे बीच,
भिषमपिता द्रोणाचारज रे सामने ॥4 ॥
हर-हर मोह भरी कायरता अरजुन केरि,
सब जग रे हित परगट हरिजी कर रहया ॥5 ॥
हर-हर पारथ प्यारा कुरूबंस्या नें जोय,
इतरी सी बाणी में जादू कर दीन्हा ॥6 ॥
हर-हर अरजुन रे मिस सबनें दीन्हो ग्यान,
गीता रो अध्याय प्रथम हरि बरणीया ॥7 ॥

गीता-उपदेश

(१६)

सुन पारथ प्यारे, समता में रहकर रण में जूझिये ॥टेक ॥
जिन्ह की तुम चिन्ता करौ वे, मरै न कोई वीर।
स्वरूप अपना अजर अमर है, मरते-सकल शरीर ॥जी०1 ॥
मोह जनित कायरता छोड़ौ, रखौ हृदय में धीर।

क्षत्रिय का यह धर्मयुद्ध है, धरौ धनुषपर तीर॥जी०2॥
जीत होय या हार हमारी, नफा होय नुकशान।
दुख भी आवै सुख भी आवै, सबमें रहौ समान॥जी०3॥
कुछ भी पाप लगे नहि तुमको, युद्ध करौ अविराम।
सम होकर के रहौ निरंतर, योग इसी का नाम॥जी०4॥
मेरे में ही चित्त लगाकर, करम करौ निषकाम।
कृपा मोरि शाश्वत पद पावौ, नाशै विघ्न तमाम॥जी०5॥
सकल धर्म अवलंबन तजकर, शरण एक लौ मौर।
चिन्ता मतकर सब पापों से, मुक्त करौं मैं तौर॥जी०6॥

गीता-अमृत-संजीवनी

(१७)

पीलो गीता अमृत बूटी, यह संजीवनी जी॥टेर॥
पढ़-पढ़ नये-नये उपन्यास, कर लिया जीवन सत्यानाश,
फिर भी होना नहीं निराश।
जो कोई शरण लेय गीता की, करत कृपा घनी जी॥1॥
गीता पाठ करौ नित नेमा, छोड़ौ टी.वी. खेल सिनेमा,
पाऔ भक्ति प्रभुकी प्रेमा।
मानव जनम सफल हो जाय, मौज कैसी बनी जी॥2॥
पढ़ कर देखौ नजर पसार, अगनित भावों का भंडार,
प्रभु की शरनागति है सार।
जन की भव-बाधा मेटन की, यह चिन्तामनी जी॥3॥

हरि-हृदयेश्वरी गीता

(१८)

गीता हृदय हमारा रे!
गीता-ज्ञान प्रचारक मेरा, प्रियतम प्यारा रे।
गीता-ज्ञान प्रचारक मेरा, सब से प्यारा रे॥टेक॥
गीता मेरा उत्तम घर है, करता वहाँ निवास।

गीता मेरी कौस्तुभमणि है, जासौं होय प्रकाश।
करौं जगमें उजियारा रे ॥1 ॥
गीता मेरे मुख की वाणी, गीता मेरा ज्ञान।
गीता मन चित्त बुद्धि हमारी, गीता मेरे प्रान।
कभी रह सकौं न न्यारा रे ॥1 ॥
गीता सौं सृष्टी रचना कर, पालन करौं हमेश।
चारौं वेद पुराण शास्त्र में, गीता–ग्यान विशेष।
लखै कोई जाननहारा रे ॥2 ॥
गीता–प्रेमी भक्तों के हित, मानव बनकर आऊँ।
परदा दूर करौं आँखों का, गुप्त रहस्य बताऊँ।
होय कोई समझन हारा रे ॥3 ॥
गीता कोरी पुस्तक नाहीं, सब धरमों का सार।
गीता–ग्यान प्रचारक के सँग, रहता हूँ हर बार।
भक्त है इष्ट हमारा रे ॥4 ॥

प्रभु का हृदय गीता

(१९)

गीता हृदय भगवान का, सब ग्यान का भण्डार है।
गीता के रसमय ग्यान से, यह चल रहा संसार है ॥टेक ॥
गीता परम विद्या सनातन, सर्व शास्त्र प्रधान है।
परब्रह्म रूपी मोक्षकारी, सब सुखों की खान है।
गीता का मुख से नाम लै, उसका भी बेड़ा पार है ॥1 ॥
सुनते सुनाते नित्य जो, लाते इसे व्यवहार में।
पाते परमपद ठौकरें, खाते नहीं संसार में।
श्रुति उपनिषद वेदान्त, सब ग्रंथों का यह शुभ सार है ॥2 ॥
धरते हुए जो ध्यान गीता–ग्यान का तन छौड़ते।
लेने उसे माधव मुरारी, आप ही उठि दौड़ते।
गहि बाँह उसकी सहज ही, करते उसे भव पार है ॥3 ॥
नर नित नये भावों से गीता, का मनन करते जहाँ।

सुख कंद नटवर नंद नंदन, प्रेम से रहते वहाँ।
हरि-भक्त जीवनमुक्त प्रेमी के हृदय का हार है॥4॥
करते पठन पाठन विचार, प्रचार गीता-ग्यान का।
उस जन से बढ़कर और कोई, प्रिय नहीं भगवानका।
देते जगत-कल्याण का, पूरण उसे अधिकार है॥5॥

सर्वश्रेष्ठ ग्रंथ गीता

(२०)

धर्म ग्रंथों में है सबसे, श्रेष्ठ मातेश्वरी गीता।
करै कल्याण जन-जन का, हमारी मातु यह गीता॥टेर॥
जगत में धर्म हैं जितने, अनेकों मत मतान्तर हैं।
बताती सार सब मत का, हमारी मातु यह गीता॥1॥
यदि व्यवहार में परमार्थ करना सिद्ध जो चाहे।
सिखायेगी कला उसको, हमारी मातु यह गीता॥2॥
अगर जो छूटना चाहे, जन्म मृत्यु के चक्कर से।
उसीकी की हर परिस्थिति में, कराती बोध यह गीता॥3॥
बुराई छोड़ दो करनी, न चाहो हो बुरा किसका।
न समझौ है बुरा कोई, सिखाती योग यह गीता॥4॥
सदा भगवान का मैं हूँ, सदा भगवान हैं मेरे।
सदा मैं शरण हूँ उनकी, पढ़ाती प्रेम यह गीता॥5॥

गीता की दीक्षा और आज की शिक्षा

(२१)

सब जग ईश्वर रूप लखावै, गीताकी यह दीक्षा है।
केक काट मोमबत्ती बुझावै, यही आज की शिक्षा है।
ऐसी गन्दी शिक्षा है॥टेक॥
पैंड-पैंड़ पर धर्म सिखावै, गीता की यह दीक्षा है।
धर्म विरोधी राष्ट्र बनावै, यही आज की शिक्षा है॥1॥
दैवी संपति के गुन लावै, गीता की यह दीक्षा है।
नास्तिकता जग में फैलावे, यही आज की शिक्षा है॥2॥

ब्रह्मचर्य आचार सिखावै, गीता की यह दीक्षा है।
छोरा-छोरी संग पढ़ावै, यही आज की शिक्षा है॥3॥
सबमें आत्मभाव दरसावै, गीता की यह दीक्षा है।
वर्णाश्रम का भेद मिटावै, यही आज की शिक्षा है॥4॥
प्रभु के भोग लगाकर पावै, गीता की यह दीक्षा है।
घृणित अखाद्य पदारथ खावै, यही आज की शिक्षा है॥5॥
योग ज्ञान अरु भक्ति सिखावै, गीता की यह दीक्षा है।
भोग-वासना में उकसावै, यही आज की शिक्षा है॥6॥
बिनु दीक्षा के घातक शिक्षा, देखौ करौ परीक्षा है।
ऐसी शिक्षा इस भारत में, कैसी बड़ी समीक्षा है॥7॥

पढ़ो क्यों न गीता

(२२)

जनम जाय बीता, पढ़ौ क्यों न गीता।
पढ़ौ क्यों न गीता, सुनौ क्यों न गीता॥टेर॥
ये हड्डियों का ढाँचा, कभी गिर पड़ैगा।
निकल जायेगा दम तो, फिर क्या करैगा।
उठा लै चलेंगे, लगेगा पलीता॥1॥
तूँ किस देश का है? कहाँ बस रहा है?
विषय-वासनाओं में क्यों फस रहा है।
मानव-जन्म मिल कै, ना रह जाय रीता॥2॥
तूँ है अंश ईश्वर का, मालिक वो तेरा।
बुलाता तुझे कह के, मेरा तूँ मेरा।
उसीकी शरण लै के होजा नचीता॥3॥
बदलता है उसका ना पकड़ौ सहारा।
कभी ना बदलता है, वह ही तुम्हारा।
वही कृष्ण राधा, वही राम सीता॥4॥

गीता बिना रीता (राजस्थानी में)

(२३)

समझ मन गीता नहिं गासी।
पढ़-सुण बाताँ घणीं सीख ले, रीतो रहजासी।
जग की बाताँ घणी सीख ले, रीतो रह जासी॥टेक॥
कूड़ कपटकर माया, जोड़े संग न कछु जासी।
लड़ आपस में माध्या भाई, खोस-खोस खासी॥1॥
सुख सुविधा में गयो जमारो, काल करै हाँसी।
दुरलभ मिनखा जनम बिगाड़्यो, भुगतो चौरासी॥2॥
हरि से बिमुख होय मत प्राणी, नहिं तो पछितासी।
बिना संत के हित की बाताँ, कुण नित समझासी॥3॥
तू ईश्वर को अंस जीवड़ा, अमरापुर वासी।
थारो जनम-मरण नहिं होवे, तूँ है अविनासी॥4॥

हमारा धन गीता

(२४)

हमारौ धन सरबस भगवद्गीता॥टेक॥
गाय-गाय रसना सौं रीझे, हरिजन हरिरस पीता॥1॥
जो गीता का पाठ करत है, हरदम रहै निश्चिन्ता॥2॥
उनकी मुक्ति का क्या संशय, तारत कुटुम्ब सहीता॥3॥
गीता श्रवण किया कुन्ती सुत, कौरव दल को जीता॥4॥
श्री गीता जी को ध्यान धरत है, परमानन्द प्रतीता॥5॥
तीन लोक अरु भुअन चतुरदस, वेद शास्त्र मथनीता॥6॥
ऋषिकेश हरि गुरु कृपा ते, पायौ प्रेम पुनीता॥7॥

जय श्रीगीता माता की

(२५)

भाई बहन प्रेम से बोलो, जय श्रीगीता माता की॥टेर॥
मानव को कर्त्तव्य सिखावै, जय श्रीगीता माता की॥1॥

फलासक्ति की चाह मिटावै, जय श्रीगीता माता की॥2॥
सदाचार सब सदगुन लावै, जय श्रीगीता माता की॥3॥
दुराचार दुर्व्यसन छुड़ावै, जय श्रीगीता माता की॥4॥
योग ज्ञान अरु भक्ति सिखावै, जय श्रीगीता माता की॥5॥
भोग मोह आसक्ति मिटावै, जय श्रीगीता माता की॥6॥
आशा ममता दोष नशावै, जय श्रीगीता माता की॥7॥
स्वस्थ करै भवरोग मिटावे, जय श्रीगीता माता की॥8॥
दैवी संपति के गुन लावै, जय श्रीगीता माता की॥9॥
आसुरि संपति दूर भगावै, जय श्रीगीता माता की॥10॥
परमारथ व्यवहार सिखावै, जय श्रीगीता माता की॥11॥
स्वारथ का डेरा उठवावै, जय श्रीगीता माता की॥12॥
अहंकार जड़मूल नशावै, जय श्रीगीता माता की॥13॥
राग-द्वेष की गन्ध मिटावै, जय श्रीगीता माता की॥14॥
देह-देहि का भेद लखावै, जय श्रीगीता माता की॥15॥
अपना निज स्वरूप दरशावै, जय श्रीगीता माता की॥16॥
दरशन का मतभेद मिटावै, जय श्रीगीता माता की॥17॥
हरि का रूप समग्र लखावै, जय श्रीगीता माता की॥18॥
समता का नित योग जनावै, जय श्रीगीता माता की॥19॥
वासुदेव सबही दरशावै, जय श्रीगीता माता की॥20॥
प्रभुसे नित संबंध लखावै, जय श्रीगीता माता की॥121॥
शरणागति का पाठ पढ़ावै, जय श्रीगीता माता की॥22॥

गीता-गायक श्रीकृष्ण (लोक-गीत)

तर्ज-केसरियो लाडो जीत्यो

(२६)

गायो अजब रसीलो गीत, गीता में प्रभु गायो रे
ए तो गायो-गायो अद्‌भुत गीत गीतामें प्रभु गायो रे॥टेर॥
सब वेद पुराणां ने मथ लीना, लियो ताजो-ताजो माखन निकाल॥1॥

ए तो पारथ रा सारथि बणिया, बाणी में इमरत घोल॥2॥
ए तो गागर में सागर भरियो, म्हारा समरथ स्याम सुजाण॥3॥
ए तो देख दसा कलजुगियाँ री, ऐ तो पिघल गया ततकाल॥4॥
म्हे तो स्वारथ में आँधा बणग्या, म्हारी आँख्याँ दीन्ही खोल॥5॥
म्हे तो नासवान में सुख मान्यो, म्हाँने परमानन्द लखाय॥6॥
म्हे तो भव-सागर में डूब रया, म्हाँने बाहेर लिया निकाल॥7॥
म्हे तो लख चौरासी भगुत रया, म्हाँने दीन्हा मुकत कराय॥8॥
म्हे तो भूखा मरता तड़फ रया, म्हाँने लीना तृपत कराय॥9॥
दल-दल माहीं फँस रया, म्हाँने ऊँचा लिया उठाय॥10॥
म्हे तो ममता रो मैल लगाय लिया, म्हाँने गंगाजी में गोता लगवाय॥11॥
म्हे तो बिषयाँ रो बिष खाय मर्‌या, म्हाँने संजीवनी पिलाय॥12॥
म्हे तो राग-द्वेष में झगड़ रया, म्हाँने वासुदेव दरशाय॥13॥

गीता का डिण्डिम घोष

(२७)

डिम्-डिम् घोष सुनो गीता का, हौश करौ जग-वासी।
आप अंश हो अविनाशी के, सब संसार विनाशी॥टेक॥
अविनाशी होकर भी तुम अपना स्वरूप विसराये।
अहंकार ममता कर इसमें, घर परिवार बसाये॥1॥
झूठा है सम्बन्ध यहाँ का, सच्चा कभी न मानो।
देह देहि का भेद समझकर, सत्य तत्त्व पहिचानो॥2॥
जो कुछ जग से मिला हुआ, सेवा कर कर्ज चुकाओ।
बदले में कुछ भी मत चाहो, अभी मुक्त हो जाओ॥3॥
बहता है संसार निरंतर, उसके संग न बहिये।
प्रभुसे नित सम्बन्ध आपका, शरणागत हो रहिये॥4॥
मानव मात्र सभी का हितकर, यह आदेश हमारा।
सच्ची बात मान लोगे तो, हो कल्याण तुम्हारा॥5॥
जय गीते! जय गीते!! जय-जय-जय माँ गीते!!!

पाप कर्म मनुष्य कामना से करता हैः ईश्वर नहीं कराता

(२८)

उथल-पुथल मच रही जगत में, उलटे मारग जाते हैं।
लोग कहै ईश्वर ही हमसे, पाप करम करवाते हैं॥टेक॥
पहले लिख रख दिया शीशपर, पाप करम का भारा है।
कैसे बचें बुरे करमों से, क्या अपराध हमारा है।
डींग हाँकते रहते ऐसे, दिनभर पाप कमाते हैं॥लोग०1॥
ईश्वर अगर पाप करवाते, मुक्त न कोई रह पाता।
सन्त शास्त्र उपदेश न होते, धरम करम शुभ उठजाता।
क्या करना अरु क्या नहिं करना, कौन किसे यह समझाता।
सभी बुराई करने लगते, विप्लव जग में मचजाता।
मलिन-बुद्धि के लोग जगत में, गलत बात फैलाते हैं॥ लोग०2॥
दिया बड़ा अधिकार पुरुष को, कृपा करी जगदीश्वर ने।
स्वारथ में अंधे होकर वे, लगे अहित जग का करने।
हो आसक्त अधर्म करै खुद, ईश्वर पर थौप दिया।
राग-द्वेष के वश में होकर, बीज पाप का रौप दिया।
एक घड़ी भी सतपुरुषों की, संगत में नहिं जाते हैं॥लोग०3॥
गीता का अध्याय तीन सैंतीस श्लोक गुरु-वाणी है।
संग्रह भोगों की ईच्छा, सब पापों की महाराणी है।
बिना कामना कोई भी नर, पाप करम नहिं कर सकता।
पाप करम करने से मानव, भव से कभी न तर सकता॥
भजो हरी को तजो कामना, संत शास्त्र समझाते हैं॥4॥

जादूभरी गीता

(२९)

क्या जाने जादू भरा हुआ, भगवान तुम्हारी गीता में।
मन चमन हमारा हरा हुआ, घनश्याम तुम्हारी गीता में॥टेक॥
जब शोक मोह से घिरजाते, तब गीता-वचन हृदय लाते।

कल्याण-खजाना भरा हुआ, भगवान तुम्हारी गीता में ॥1॥
गीता ग्रंथों में न्यारी है, श्रुति जुगती अनुभवकारी है।
युग-युग का अनुभव भरा हुआ, श्रीकृष्ण तुम्हारी गीता में ॥2॥
गीता सन्तों का जीवन है, सुरसरि ज्यों निर्मल पावन है।
विग्यान ग्यान रस भरा हुआ, शरणागति अमरित भरा हुआ,
हरि प्रेम लबालब भरा हुआ, श्रीकृष्ण तुम्हारी गीता में ॥3॥

(३०)

जयश्री जगत-गुरु भगवान, अनोखी थाँरी गीता।
अनोखी थाँरी गीता, सर्वोपरि थाँरी गीता।
करती पतितों का कल्यान ॥अ० 1॥
रणभूमि में शंख बजाया, धृतराष्ट्र-पुत्र घबराया।
जै-जै अरजुन के रथवान ॥अ० 2॥
जोगेश्वर कृष्ण मुरारी, सब जीवों के हितकारी।
प्रेमी भगत करै गुणगान ॥अ० 3॥
सुख-भोग वासना धनकी, दुख पीड़ा अंतरमन की।
मेटे सबका नाम निशान ॥अ० 4॥
कर्त्तव्य-कर्म दरशावै, समता का पाठ पढ़ावै।
पूरण योग, भक्ति अरु ग्यान ॥अ० 5॥
जो गीता अमरित पीता, वह मुक्त होय नर जीता।
ऐसे दुरलभ सन्त महान ॥अ० 6॥
जोगी तपसी अरु ग्यानी, करमठ विरक्त अरु ध्यानी।
तब शरणागत भक्त प्रधान ॥अ० 7॥

गीताजी की आरती

(३१)

आरती श्री भगवद् गीता की।
अतुल संपदा परमपिता की।
कमलनाभ हरि मुख की बानी।

सकल शास्त्र श्रुतियों की रानी।
सदाचार सदगुन की खानी।
अवलंबन भव भय भीता की॥1॥ आ०
रहनि करनि की कला सिखावनि।
योग ज्ञान वैराग्य बढ़ावनि।
युगों-युगों आनँद बरषावनि।
सरित पुनीत प्रेम समता की॥2॥ आ०
सुनै पढ़ै समझै समझावै।
नित-नित नया भाव दरशावै।
सरणागति प्रभु की सोइ पावै।
करना रहत नहीं कछु बाकी॥3॥ आ०
हरि भक्तन्ह प्रिय हरि हिय वासिनि।
विषय वासना मूल विनाशिनी।
निज प्रतिभा त्रैलोक प्रकाशिनि।
उमा रमा राधा सीता की॥4॥ आ०

गोपाल-गौमाता का कीर्तन

(३२)

सुरभि गैया की जय, मेरी मैया की जय।
लाला बालकृष्ण बल भैया की जय।
वन-वन में धेनु चरैया की जय।
वंशीवट वेणु बजैया की जय।
नित राधे-राधे नाम रटैया की जय॥टेर॥
कारी कामरी है साथ, लकुट लिए हाथ।
मेरे प्यारे-प्यारे कृष्ण कन्हैया की जय॥1॥
नन्द यशुदा के छैल, ठाड़े गैयाजी के गैल।
ग्वालन सँग खेल, खेलैया की जय॥2॥
दिन ढ़रत ही श्याम, लै-लै गैयाजी का नाम।
गिरिपर चढ़ि टेर बुलैया की जय॥3॥

गौरक्षा के पद (राजस्थानीमें)

(३३)

सुण धणियाणीं हे, गायाँ ने दे दे चारो पाणी हे॥टेर॥
जोड़-जोड़ धन भेलो कीन्हो, बेटा पोता ताणी हे।
मरसी जदवे राख उडासी, बीना छाणी हे॥1॥
चोखा-चोखा करम करे तो, संत कहे तूँ स्याणी हे।
किणरे सँगमें चली नहीं है, कौडी काणी हे॥2॥
भूल गई तिरलोक नाथ ने, बण बैठी तूँ राणी हे।
रटले अब तो राम-नाम, थोड़ी जिंदगाणी हे॥3॥
सतसँग सिमरण सेवा करले, मत कर आनाकानी हे।
दान कर्याँ धन घटे नहीं, संताँ री बाणी हे॥4॥

गैया के पीछे गोपाल

(३४)

छोटी-छोटी गैया, छोटे-छोटे ग्वाल, छोटो सौ मेरो मदन गोपाल॥टेर॥
आगे-आगे गैया, पीछे-पीछे ग्वाल, बिच-बिच चाले मेरो मदन गोपाल॥1॥
कैसे चाले गैया, कैसे चाले ग्वाल, कैसे-कैसे चाले मेरो मदन गोपाल।
धीमी चाले गैया, नाचे कूदे ग्वाल, ठुमक-ठुमक चाले मदन गोपाल॥2॥
कैसी-कैसी गैया, कैसे-कैसे ग्वाल, कैसी सी सूरत वारो मदन गोपाल।
धौरी-धुमरी गैया, गोरे-गोरे ग्वाल, साँवरो सों भोरो प्यारो मदन गोपाल॥3॥
क्या खावे गैया, क्या खावे ग्वाल, क्या-क्या खावे मेरो मदन गोपाल।
घास खावे गैया, दूध पीवे ग्वाल, माखन खवैया मेरो मदन गोपाल॥4॥
क्या ओढ़े गैया, क्या ओढ़े ग्वाल, क्या-क्या ओढ़े मेरो मदन गोपाल।
झूल ओढ़े गैया, लम्बी टोपी ग्वाल, कारी कामर ओढ़े मेरो मदन गोपाल॥5॥
किसके संग गैया, किसके संग ग्वाल, किसके सँग रहे मेरो मदन गोपाल।
कृष्ण सँग गैया, कन्हैया सँग ग्वाल, संतन के सँग मेरो मदन गोपाल॥6॥

गौ-सेवा से कल्याण

(३५)

जगत का मीठा मेवा, सुरभी मैया की सेवा।
जगत का मीठा मेवा, गैया मैया की सेवा ॥टेर ॥
धन्य-धन्य वह देह प्राण जो गौ माता के काम आये।
हो प्रसन्न हूँकार करे तो, पाप भसम हो जाये जी ॥1 ॥
हरिद्वार बद्री रामेश्वर, मथुरा काशी सब इनमें ॥
गौ माता की सेवा बिन तूँ, तीरथ-फल नहीं पावै जी ॥2 ॥
तिर्थों में ये श्रेष्ठ तीर्थ हैं, धर्मों में ये श्रेष्ठ धरम।
देवों में ये श्रेष्ठ देव हैं, ध्यावै सोई फल पावै जी ॥3 ॥
पूज्यों में ये परम पूज्य है, गुरुओं में ये परम गुरु।
इनकी सेवा अमरित मेवा, प्रेम प्रभु का वह पावै जी ॥4 ॥
हरी-हरी जो घास खिलावै, होले-होले सहलावै।
इनका आशीर्वाद मिलै तो, भवसागर तर जावै जी ॥5 ॥

गौ-वध बन्द न करने वालोंको वोट न दें

(३६)

गउ-हत्यारा पापीड़ा ने, वोट मत दीज्यो जी!
सज्जन थे सुणज्यो जी।
गउ-हत्या नहिं बंद करे बाँने, वोट मत दीज्यो जी!
सज्जन थे सुणज्यो जी ॥टेर ॥
भज गोविन्द-गोविन्द गोपाला, भज मुरली मनोहर नन्दलाला।
बाताँ में बहकावोला, थोड़ा भी मत बहकीज्यो जी।
नरकाँ माहीं जावण री, त्यार्‌याँ मत कीज्योजी ॥1 ॥
चप्पल जूता चमड़ेरा थे अब तो मत पहरीज्यो जी।
बेग बेल्ट बिस्तर चमड़े रा, रख मत लीज्योजी ॥2 ॥
चूल्हे परली पहली रोटी, गउ माता नें दीज्यो जी।
सब मिल कर गौ माता ने परणाम करीज्योजी ॥3 ॥

दूध दही अरु घिरत गाय रो, घर में नित बरतीज्यो जी।
वेजीटेबल नकली घी नें, छुह मत लीज्यो जी ॥4 ॥
गोबर अरु गौ रज से घर में आँगण चौक पुरीज्यो जी।
गऊ लोक में वास करो, हरि दरसण कीज्योजी ॥5 ॥

गौ-हत्यारों को ललकार

(३७)

गूँज उठी है धरती सारी, गौ-रक्षा के नारों से।
जूझ पड़ो! जूझ पड़ो! हे भारत वालो, गउओं के हत्यारौं से ॥टेर ॥
कहाँ छुपे गौभक्तों आकर, झट अपना बल दिखलाओ।
कहाँ छुपे हो ब्रज के बासी, कमर बाँध कर डट जाओ ॥
गउ माता के प्राण बचाओ, उन पापी गद्दारौं से ॥1 ॥
कहाँ गई खूँखार तेज क्षत्रिय वीरों की संताने।
कहाँ गये वो हल्दी घाटी के महाराणा मस्ताने ॥
कहाँ गई वो वीर रमणियाँ जो खेली अंगारौं से ॥2 ॥
जाग उठो हे वीर मराठों, दुष्टों को अब ललकारौ ॥
गौ-वध पर पाबन्दी करदो, हे पंजाबी सरदारौ ॥
घर-घर गली-गली गूँजादो, अपनी तेज हुँकारों से ॥3 ॥
सब संतों के सपनो को तुम, सच्चा कर कै दिखलाओ।
इतिहासों के पन्नों पर तुम, काला दाग न लगवाओ ॥
समझा दो सबको अपने गौमाता के उपकारौं से ॥4 ॥
श्री सुरभै नमः । श्री सुरभै नमः।
श्री सुरभै नमः । श्री सुरभै नमः।

गौ-भक्तों की चेतावनी

(३८)

सन्तों ऊपर लाठी चलती गउओं पर तलवार,
जागौ भारत के नरनार ॥टेर ॥
जागो बंगाली, मद्रासी, जाग उठो मरुधर के वासी।

होश करो पंजाब निवासी, बन्द करो भारत की हाँसी॥
बेटों के रहते माँ कटती, है हमको धिक्कार॥1॥

धरम बैल तो बिलख रहा है, दारुण दुख अति भोग रहा है।
पाप दिनों-दिन पनप रहा है, अधिकारी कोई सुन न रहा है।
चिल्लावै रोवे तो पड़ती, डंडों की बौछार॥2॥

लाखौं नित गउवें कटवावे, मांस विदेशों में भिजवावे।
हिंसा को उत्पत्ति बतावे, बेअक्लों को कौन सिखावे॥
चूल्लू भर पानी में ऐसी, डूब मरै सरकार॥3॥

हे गोविन्द प्रगट हो जाओ, गौ माता के प्राण बचाओ।
गऊ दुग्ध की नदी बहाओ, गोबर से खेती उपजाओ॥
भाई बहनों सबही मिलकर, प्रभु से करौ पुकार॥4॥

गौमाता की करुणाभरी पुकार

(३९)

हे सुनो विश्व के लोगों, यह मेरी करुन कहानी।
क्यों दया धर्म विसराया, या खून हो गया पानी॥
हे अखिल विश्व के लोगों, मेरी सुन लो करुन कहानी॥क्यों०॥टेर॥
मैं सबको दूध पिलाई, जग की मैया कहलाई।
है क्या अपराध हमारा, जो काटे आज कसाई॥
बस भीख प्राण की दे दो, मैं द्वार तिहारे आई,
मैं सबसे निरबल प्राणी, यह असुर करै मनमानी॥1॥ हे०
मैं पीड़ित होय डकराती, चाबुक से पीटी जाती।
उबला जल मोपर डारै, मैं सहन नहीं कर पाती॥
जब यन्त्र मौत का आता, मैं हाय-हाय चिल्लाती,
मेरा साथ न कोई देता, अब रही न किसके ग्लानी॥2॥ हे०
हे परमपिता परमेश्वर, क्यों हमको मूक बनाया।
नहिं हाथ दिए लड़ने को, मानव भी हुआ पराया॥
नारायण अब तुम आवो, वधिको से मोहि छुड़ावो,

मैं फर्ज निभाऊँ माँ का, नहिं समझ रहे अग्यानी ॥3॥ हे०
क्यों माँ का दूध लजाते, मेरा ही मांस बिकाते।
गौ-हत्या के चमड़े से, तुम जूते चप्पल बनाते॥
संतन की आग्या मानो, खुद अपने को पहिचानो,
गौ-हत्या बन्द करो रे, रहने दो नाम निशानी ॥4॥ हे०

अधर्मियों का राज्य

(४०)

देखा विधर्मियों का राज।
साशक बनकर गऊ कटावै, थोड़ी शरम न लाज॥टेर॥
बूचड़खाना बन्द करै नहिं, कूकत हिन्दु समाज।
वोट लेन को मुँह लपकाते, सिर में चल रहि खाज॥1॥
राम-रूप, भाई-बहनों को, अरज करौं महाराज।
इनको वोट कभी मत देना, होवै सुखी समाज॥2॥

प्रभुसे दीनतापूर्वक प्रार्थना

(४१)

हे कृपासिन्धु कर प्यार, मुझको अपनालो।
मेरे मात-पिता कर प्यार, मुझको अपनालो॥टेर॥
मैं अपराधी हूँ, अगनित जनमों का, नख-शिख में भरा विकार॥1॥
हो रहा अंधा हूँ, विषय सुख भोगों में, हूँ आदत से लाचार॥2॥
होनी जानी जी, कुछ नहिं मेरे में, लो मार डाँट पुचकार॥3॥
ऐसा बिगड़ा हूँ, ढूंढा नहीं मिले, चाहो देओ और बिगाड़॥4॥
दल-दल माहीं जी, नीचा उतर रहा, गहो लम्बे हाथ पसार॥5॥
पल-पल छिन-छिन जी, भारी होय रहा, कछु बस नहिं चले हमार॥6॥
सरस बनादो जी, सूखे लकड़े को, करो करुणाँकी बौछार॥7॥
हरा-भरा कर दो, सूखे लकड़े को, बरसादो प्रेम की धार॥8॥
भला आदमी जी, मुझको लोग कहे, मेरा चूर करो अहंकार॥9॥
किसके आगे जी, आँसू ढलकाऊँ, सब धोखे का संसार॥10॥

जैसा भी हूँ जी, आपके चरणों में, चाहो तो लेओ सुधार ॥11 ॥
सुपने में भी जी, आपको नहिं भूलूँ, देओ ऐसी मोहिनी डार ॥12 ॥
ज्यों बुलवाओ जी, त्यों ही बोल रहा, प्रभु आपहि बोलन हार ॥13 ॥

गौमाता की आरती

(४२)

जय सुरभी माता, जय सुरभी माता।
सुर नर मुनि हितकारिणि, जन-जन की त्राता ॥जय० ॥
तुम ही सब देवन को, आहुति की दाता।
पंचगव्य पय घृत की, तुमहीं निरमाता ॥जय० ॥
तव पाछे नित डोलत, राम-श्याम भ्राता।
नंगे पाँव धूप में, बिनु पनही छाता ॥जय० ॥
अखिल विश्व में तेरा, नाम जगमगाता।
जन्म-विवाह मृत्यु से, जुड़ा गहन नाता ॥जय० ॥
हो प्रशन्न हित चित से, जो तुमको ध्याता।
जमपुर से उस नर का, खाता उठ जाता ॥जय० ॥
जो तेरे गोमय से, आँगन लिपवाता।
भूत-प्रेत-बाधा से, वह नर बच जाता ॥जय० ॥
बरनत थके बेद गुन, पार नहीं पाता।
अल्प बुद्धि मानव की, है केतिक बाता ॥जय० ॥
जो सुरभि माता की, आरति नित गाता।
सकल देव पूजन का, निश्चित फल पाता ॥जय० ॥

गैया मैया की आरती

(४३)

आरति श्री गैया मैया की।
आरति-हरनि विश्व-धैया की ॥
अर्थ-काम-सद्धर्म प्रदायिनि, अविचल अमल मुक्ति पद दायिनी,
सुर-मानव सौभाग्य-विधायिनि, प्यारी पूज्य नन्द-छैया की ॥1 ॥

अखिल विश्व प्रतिपालिनि माता, मधुर अमिय दुग्धान्न प्रदाता,
रोग शोक संकट परित्राता, भवसागर हित दृढ़ नैया की॥2॥
आयु-ओज-आरोग्य विकासिनि, दु:ख-दैन्य-दारिद्र विनाशिनि,
सुषमा-सौख्य-समृद्धि प्रकाशिनि, विमल विवेक-बुद्धि दैया की॥3॥
सेवक हो चाहे दुखदाई, सम पय-सुधा पियावति माई,
शत्रु मित्र सबको सुखदाई, स्नेह-स्वभाव विश्व-जैया की॥4॥

संकीर्तन-धुन

(४४)

हे राम! मेरे राम!

तूँ हीं माता, तूँ हीं पिता है, मेरे तुम हीं हो सीता राम॥1॥
तूँ हीं माता, तूँ हीं पिता है, मेरे तुम हीं हो राधे श्याम॥2॥
तूँ हीं माता, तूँ हीं पिता है, मेरा तुमसे नाता तमाम॥3॥
तूं हीं रमैया, कृष्ण कन्हैया, तूँ हीं है चारौं धाम॥4॥
तूँ हीं स्वामी, अंतरयामी, अति पावन है तेरा नाम॥5॥
तूँ हीं हमारा, एक सहारा, है लाखौं तुम्हें प्रणाम॥6॥
तूँ हीं बनावे, तूँ बनजावे, यह तेरिहि लीला तमाम॥7॥
हे मेरे प्यारे, नैनों के तारे, है तुम बिन जीना हराम॥8॥
कृपा तुम्हारी विनति हमारी, तोहि भूले न आठौं याम॥9॥
तेरी जय-जय हो सीता राम! हे राम! मेरे राम॥10॥
तेरी जय-जय हो राधेश्याम! हे राम! मेरे राम॥11॥

गंगाजी सहित पांच 'ग' अक्षर

(४५)

गंगा गैया गायत्री गोविन्द गीता गाइये॥टेर॥
गंगाजी का दर्शन कर के, मस्तक नवाइये।
गंगाजी का पूजन कीजै, गंगाजी में न्हाइये॥1॥
गैयाजी का दूध लै के, गंगा पै चढ़ाइये।

धूम दीप कुम्कुम् माला, चन्दन चढ़ाइये॥2॥
गंगाजल पान कीजै, औरों को पिवाइये।
गंगा-जल सौं पित्तरों को, तृपत कराइये॥3॥
गंगा दसमी के दिन, गंगालहरी गाइये।
गंगा-जल विल्वपत्र, सिवजी पै चढ़ाइये॥4॥
गंगाजी के तट गीताभवन में आइये।
सत्तसंग हरिकीर्तन करिये कराइये॥5॥
गंगा-जल साथ लै के, जाना जहाँ जाइये।
गंगा-जल सौं दाल भात रोटी भी बनाइये॥6॥
गंगा माताजी को लाल चूनरी ओढ़ाइये।
प्रभु के चरन में अनन्य प्रेम पाइये॥7॥

श्रीगंगाजी की महिमा

(४६)

हर-हर गंगा लहर तंरगा, दरशन से होय पातक भंगा।
गंगा-मैया को नाम उचारूँ, अगनित पापों का भार उतारूँ॥
गंगा मैया का दरशन पाऊँ, पूजा करूँ, वाको सीस नवाऊँ।
गंगा के तट पर दीया जलाऊँ, गंगा मैया की आरती गाऊँ॥
गंगा मैया की रज्जी में लेटूँ, परमेश्वर सौं भुजा भरि भेंटूँ।
गंगा किनारे झुमत डोलूँ, मैया! मैया! ऊँचे स्वर बोलूँ॥
गंगा को जल पीवौं गंगामें न्हाऊँ, गंगा के जल सौं भोजन पाऊँ॥
गंगा के घाट करौं सत्तसंगा, पावौं प्रभुजी की भगति अभंगा॥

(४७)

तिहारो दरश मोही भावै, श्रीगंगा मैया।
हरि के चरण से प्रगटी हे मैया, शंकर सीस चढ़ावै।
सुर-नर मुनि तेरी करै वीनती, वेद विमल जस गावै।
जो गंगा मैया तेरौ जल पीवै, भवसागर तर जावै।

जो गंगाजी में स्नान करै नित, बहुरि जनम नहीं पावै।
दास नारायण शरण तिहारी, जनम-जनम जस गावै।

★

हर-हर महादेव शम्भो, काशी विश्वनाथ गंगे।

(४८)

चल मन गंगा तट पर चल रे।
जहँ प्रभु के प्रिय संत विराजे, याद करौ पल-पल रे।
जहाँ बैठि मुनि ध्यान धरत हैं, होरहि धुनि कल-कल रे।
जहाँ करत सत्तसंग नाम जप, चित्त बहजाय पिघल रे।
जँह केवट प्रभु चरन पखारे, प्रेम से मसल-मसल रे।
जेहि पूजत जानकि रघुनंदन, आये अवध कुसल रे।
जाके दरस परस सौं नासत, राग-द्वेष रिपु दल रे।
कर प्रणाम सुरसरि मैया को, छोड़ कपट छल-बल रे।

गंगा-स्नान व सत्त्संग की महिमा

(४९)

चाल रे! चाल रे! चाल रे! तोहि गंगा न्हवाय लाऊँ चाले रे।
चाले रे! चाल रे! चाल रे! सतसंग कराय लाऊँ चाल रे॥टेर॥
बिनु सतसंग लगे नर जैसे, भूत प्रेत बैताल रे॥१॥
सतसंगत की गोठ लगी है, उड़ रहे माला-माल रे॥२॥
निर्धन आवै धनपति होवै, खुली पड़ी है टकसाल रे॥३॥
कलियुग माहीं सतयुग लाये, धन्य है सन्त दयाल रे॥४॥
छोड़ जगत के गोरख धंधे, शुभ अवसर मत टाल रे॥५॥
महापुरूषों के दरशन दुरलभ, पड़ रहा जग में काल रे॥६॥
जो संतन की सीख न मानै, जम्म कुटे तेरी खाल रे॥७॥
दास अग्यात करौ सतसंगत, हो जाओ सबहि निहाल रे॥८॥

प्रभुजी से प्रार्थना

(५०)

प्यारा लागो जी, प्रभुजी म्हाँने प्यारा लागो जी।
ओ जी म्हारे और कछू नहिं चाह, प्रभु जी म्हाँने० ॥१॥
घरमें राखो जी, प्रभुजी चाहे बन में राखो जी।
ओजी म्हाँरी डोरी है थाँरे हात, प्रभुजी म्हाँने० ॥२॥
सुख स्यूँ राखो जी, प्रभुजी चाहे दुखस्यूँ राखो जी।
ओजी म्हाँनें राखो संतन साथ, प्रभुजी म्हाँने० ॥३॥
और न कोई जी, प्रभुजी म्हाँरे दूजो न कोई जी।
ओजी थाँने केहवां सौगन्द खाय, प्रभुजी म्हाँने० ॥४॥
मत तरसाओ जी प्रभुजी म्हाँने मत तरसाओ जी।
ओजी थाँरे शरण पड़या म्हे आय, प्रभुजी म्हाँने० ॥५॥

हरि-गुण गाने की प्रेरणा

(५१)

आवो भाई बहनाँ आपाँ हरी गुण गावाँ।
कलजुग में सतजुग ल्यावाँ, आपाँ० ॥टेर॥
भाई बन्धु रूठे चाहे रूठे जग सारो।
एक नहीं रूठे प्यारो साँवरियो हमारो॥
भव सागर में गोता नहीं खावाँ, आपाँ० ॥१॥
आड़ोसी पाड़ोसी ने भी संग लेता चालो जी।
बैरी भी होवे तो वाँनें गले से लगालो जी॥
हिल मिल चाल्याँ घणाँ सुख पावाँ, आपाँ० ॥२॥
नींदड़ली फिरे है आड़ी, करेली बिगाड़ो।
सुख-दुख फोड़ा घाले तो भी, पाछा ना पधारो॥
पाछा फिरयाँ सूं घणाँ पिछतावाँ, आपाँ० ॥३॥
माता बहनां भाई जठे राम घुन गावे।
रामजीरा घणाँ प्यारा संत बठे आवे॥
जाकी किरपा सूँ आपाँ तिर जावाँ, आपाँ० ॥४॥

सत्संग की उत्कंठा

(५२)

मेरा जनम-मरन छुटि जावन दे। संतसंगत में जावन दे॥
मेरा आवागमन मिटावन दे। संतसंगत में जावन दे॥टेर॥
ना मांगूँ मैं लड्डू जलेबी, रूखी सूकी तो रोटी खावन दे॥1॥
ना मैं देखौं नाटक सिनेमा, रामजी के दरशन पावन दे॥2॥
मैं अपने प्रभु का गुन गावौं, और गीत मत गावन दे॥3॥
निन्दा-चुगली करै वो जाने, हमें तो हरि गुन गावन दे॥4॥
आज बनी है मेरे राम रसोई, ठाकुरजी के भोग लगावन दे॥5॥
आज हमारे घर संत पधारे, महाप्रसाद जिमावन दे॥6॥
भक्त चरित्र हरी की लीला, अमरित रस बरसावन दे॥7॥
चाहे तूँ मोहि मार कूटले, चाहे तो रोटी मत खावन दे॥8॥
चलो जी पियाजी बैकुण्ठ ले चलूँ, परमानन्द सुख पावन दे॥9॥

सत्संग में अपने साथी-संबंधी को भी लायें

(५३)

अकेले ही क्या आवौ जी, सतसंगत में भाई।
सँग औरों को भी लावौ जी, सतसंगत में भाई।
घर वालों को भी लावौ जी, सतसंगत में भाई॥टेर॥
मात-पिता, भाई को लावौ, लावौ चाची-ताई।
बेटा और बहू को लावो, बेटी संग जँवाई॥1॥
सास-ससुर को भी ले आवौ, सालों को समझाई।
समधी को समधन को लावौ, खातिर करौ सवाई॥2॥
जाती को नाती को लावौ, लावौ घर को नाई।
बहन-भानजी, भुवा को लावौ, बाँटौ आज बधाई॥3॥
बैरी को दुश्मन को लावौ, दी जौ बैर हटाई।
पास-पड़ौसी सबको लावौ, सबकी करौ भलाई॥4॥

गाँव शहर की गली–गली में, कह दो ढोल बजाई।
परमेश्वर को अपना मानौ, ये ही बड़ी कमाई॥5॥

साधु–संग

(५४)

साधू सँग करलै भारतिया, तेरे घरपर हो रहि लूट रे॥टेर॥
भवसागर में भटक रहा क्यों दीन्ही प्रभु को पूठ रे॥1॥
प्रभु का चेतन अंश कहा कर, फिर क्यों बोले झूठ रे॥2॥
दुरलभ मानुष जनम बिगाड़ा, मिनख कहौं या ऊँट रे॥3॥
अब तौ सीख मान संतन की, जम्म सौं जावै छूट रे॥4॥
हरी भजै तो होगी तेरी, शोभा चारौं कूट रे॥5॥

(५५)

सतसंग के परताप से दुख दरिद्र दारुन टल गया।
अगनित जनम के पाप का, कूड़ा भरा सब जल गया॥टेर॥
बेहोश रहता था सदा, सुख भोग की आसक्ति में।
प्रगटत ही ग्यान प्रकाश के, मुरझा पड़ा था खिल गया॥1॥
फूला हुआ फिरता सदा, जड़ देह के अभिमान में।
भइ सन्त चरनन की कृपा, अहँकार असुर निकल गया॥2॥
पूछे है कोई क्या मिला, कहने में कुछ आता नहीं।
बिछुड़ा न पलभर भी कभी, अपनेमें अपना मिल गया॥3॥
निज प्राणधन से विमुख हो, दर–दर भटकता फिर रहा।
सन्तन ने सनमुख कर दिया, व्यवधान का पट खुल गया॥4॥
नित वे ही वे परिपूर्ण हैं, सब देश में सब काल में।
जग भिन्नता का भ्रम मिटा, घनश्याम रँग में घुल गया॥5॥

सम्बन्ध की दृढ़ स्वीकृति

(५६)

मान लिया! मान लिया! मान लिया जी।
रामजी हमारे मान लिया जी॥टेर॥

हम हैं प्रभु के, प्रभुजी हमारे।
मन में दृढ़ यह ठान लिया जी ॥1 ॥
कृपा भई संतन की हम पर।
बाँह पकड़ कर टान लिया जी ॥2 ॥
बिनु प्रभुके अपना नहिं कोई।
सब जग चलनि सै छान लिया जी ॥3 ॥
संशय भ्रम का लेष नहीं है।
गंगाजी के तट पर मान लिया जी ॥4 ॥
हम तो नित शरणागत प्रभु के।
सन्तों से यह वरदान लिया जी ॥5 ॥
सिर का भार बोझ सब उतरा।
अपने में पहचान लिया जी ॥6 ॥

गुरुजन की असीम कृपा

(५७)

ऐसी करी गुरुदेव कृपा मेरा, मोह का बंधन तोड़ दिया ॥टेर ॥
दौड़ रहा दिन रात सदा, जग के सब कार व्योहारन में ॥
स्वपने सम विश्व दिखाय मुझे, मेरे चंचल चित्त को मोड़ दिया ॥1 ॥
कोई शेष गणेश महेश रटे, कोई पूजत पीर पैगम्बर को।
सब पंथ गरंथ छुड़ा करके, इक ईश्वर में मन जोड़ दिया ॥2 ॥
कोई ढूँढत है मथुरा नगरी, कोई जाय बनारस वास करै।
जब व्यापक रूप पिछान लिया, सब भरम का भाँडा फोड़ दिया ॥3 ॥
कौन करौं गुरुदेव की भेंट, न वस्तु दिखे तिहुँ लोकन में ॥
ब्रह्मानन्द समान न होय कभी, धन मानिक लाख करोड़ दिया ॥4 ॥

(५८)

बापजी ने सौ–सौ कोटिन नमन।
जो होग्या जो होसी थाँरे, सब सन्ताँ ने नमन ॥1 ॥
जो होग्या जो होसी थाँरे, सब भगताँ ने नमन ॥2 ॥

गुरुजन की बलिहारी जाऊँ, सनमुख कीनो दृगन ॥3 ॥
साँचो समँद आपसूँ जोड्यो, मिट ग्यो आवागमन ॥4 ॥
भई उदित सुभ मंगल वेला, बार घड़ी तिथि लगन ॥5 ॥
जनम-जनम का साँसा मेट्या, कियो न कोई जतन ॥6 ॥
नाम रूप जगका सब मेट्या, मेट्या जाती बरन ॥7 ॥
तरक-बितरक कुवे में पटक्या, मिटग्या खंडन मँडन ॥8 ॥
हिवड़े भीतर सदा बिराजो, थाँरो ही निज भवन ॥9 ॥
आँख्याँ सूँ ओझल मत होज्यो, देद्यो प्रभुजी बचन ॥10 ॥

माँ-बाप को मत भूलना

(५९)

तुम भूलना सब कुछ मगर माँ-बाप को मत भूलना।
करजा बड़ा माँ-बाप का, सिरपर चढ़ा मत भूलना ॥टेर ॥
मुखड़ा तुम्हारा देखनें, पूजे थे देवी देवता।
जन्मे तो सब हर्षित हुये, इस बात को मत भूलना ॥1 ॥
थाली बजा खुशियाँ मना, निज जन इकट्ठे कर लिये।
घर-घर फिरे लड्डू बटाये, प्यार यह मत भूलना ॥2 ॥
शिशुपन में जब रोगी हुआ, लेती थी माँ कड़वी दवा।
टोना किया नजरें उतारी, वह घड़ी मत भूलना ॥3 ॥
माता के कपड़े कीमती, मल-मूत्र से मैले किये।
धो पौंछ कर छाती लगाया, स्नेह यह मत भूलना ॥4 ॥
सरदी की ठंडी रात में, बिस्तर को गीला कर दिया।
तब साफ कर सूखे सुलाया, वह घड़ी मत भूलना ॥5 ॥
गोदी बिठाकर ग्रास अपना, तोड़कर मुख में दिया।
तुम उगल धरती पर गिराया, वह समय मत भूलना ॥6 ॥
माँ ने सिखाया बैठना, तुम लुढ़क कर गिरते वहाँ।
फिर बोलना चलना सिखाया, वह समय मत भूलना ॥7 ॥
अब तो बड़ी बातें बनाते, दैन यह माँ-बाप की।

कहिं छेद मत करना कलेजे, युग-युगों मत भूलना ॥8 ॥
तुमने कमाया धन बहुत, माँ-बाप को सुख ना दिया।
धिक्कार है ऐसी कमाई, बात यह मत भूलना ॥9 ॥
धन से तो वस्तु सभी मिले, माता-पिता मिलते नहीं।
चरनों में नित्य प्रणाम करिये, वचन यह मत भूलना ॥10 ॥
यदि तुम भी निज संतान से, सुख मिलन की आशा करौ।
अति मुदित हो माँ-बाप की, सेवा करौ मत भूलना ॥11 ॥
थी मातु कैकई पिता दशरथ, वचन प्रभु टाला नहीं।
लंका विजय कर आ गये, सिया राम को मत भूलना ॥12 ॥

मीठा मेवा

(६०)

जगत का मीठा मेवा, मात-पिता की है सेवा ॥टेर ॥
धन्य-धन्य वह देह प्राण जो, मात-पिता के काम आये।
आशीर्वाद जो मात-पिता दे, जन्म सफल हो जाये ॥1 ॥
हरिद्वार बद्री रामेश्वर, मथुरा काशी को जाये।
मात-पिता की सेवा बिन तूँ, तीरथ फल नहीं पावै ॥2 ॥
तीर्थों में ये श्रेष्ठ तीर्थ है, धर्मों में ये श्रेष्ठ धरम।
देवों में ये इष्टदेव है, ध्यावै सोई सुख पावै ॥3 ॥
पूज्यों में ये परम पूज्य है, गुरुओं में ये परम गुरु।
इनकी सेवा अमरित मेवा, पाये से तृप्त हो जाये ॥4 ॥

माता-पिता का कर्तव्य

(६१)

संतानों का धर्म है सेवा मात-पिता की करना।
मात-पिता का फर्ज है, सदगुन संतानों में भरना ॥टेक ॥
ठंडी नजर प्रेम की रखना, हित के वचन सुनाना।
धर्मोत्साह बढ़ाकर उनका, जीवन दिव्य बनाना।
अनुचित आग्या कभी न देना, ज्यादा नहीं दबाना।

है विशेष यह जिम्मेवारी, मानव उसे बनाना।
समदृष्टि सबही पर रखना, पक्षपात नहिं करना॥1॥ मात०
पिता तरुन बच्चों को अपना, मित्र जान व्यवहारें।
उनकी बातें सुने ध्यान से, अच्छी हो स्वीकारें।
यों वे आग्याधीन रहैंगे, नहिं उतपात करैंगे।
हित की शिक्षा अनुशासन पर, समुचित ध्यान धरैंगे।
तुम हो उनके पूर्व रूप इस तथ्य को नहीं बिसरना॥2॥ मात०
सास प्रेम से बहुओं को सब, घर के काम सिखावै।
बुरे वचन अपशब्द न बोले, क्रोध न उनपर लावैं।
गृह कारज अरु सेवा सबकी, भूल न कभी छुड़ावैं।
स्वयं काम सब करके श्रम का, वातावरण बनावैं।
निज विवेक से रोग शोक दुख, दारिद घर का हरना॥3॥ मात०
बच्चे हों जो आग्याकारी, उनकी भी सुन लेना।
श्रद्धा से जो कुछ भी पूछे, हित की सलाह देना।
नया समय है, नये हैं बच्चे, नई हवायें चलती।
अपने ही भीतर में देखौ, कहाँ-कहाँ है गलती।
छोड़ दुराग्रह औरों के, अधिकार की रक्षा करना॥4॥ मात०
धर्मशास्त्र अरु सन्तों की यह, सरल बात अपनाओ।
जैसा उन्हें बनाना चाहो, वैसे तुम बन जाओ।
जो सुधार उनका चाहो तो, पहले आप सुधर लो।
जो उनसे करवाना चाहो, पहले ही तुम करलो।
पकड़ो एक सहारा प्रभु का, सुमिरन हरदम करना॥5॥ मात०

माताएँ हरि भक्त पैदा करें (राजस्थानीमें)

(६२)

पुत्र जनो हरि-भक्त जनो री, सुन लो मायाँ बायाँ हे।
बिना भक्त जन-जन कर, बिरथा खोओ मत यह काया हे।
परमेश्वर से करो प्रार्थना, सफल होय यह काया हे॥टेर॥
जैसे मात कयाधू ने प्रहलाद भक्त को जाया हे।

खंभे मायँ प्रगट कर प्रभु को, घट-घट में दरसाया हे॥1॥
मात सुनीती आग्या दीन्ही, ध्रुव तप करन सिधाया हे।
मदालसा ने लोरी देकर, सुत को बोध कराया हे॥2॥
साठ हजार सगर के बेटा, कोई न गंगा लाया हे।
कुल में एक भागीरथ जनमा, सबको मुक्त कराया हे॥3॥
मात सुमित्रा लखनलाल को, राम के संग पठाया हे।
सेवा कर प्रभु की किरती का, नभ में ध्वज फहराया हे॥4॥
मात अंजनी हनुमत जाया, सुबरण लंक जलाया हे।
सुध लेकर सीता की आया, प्रभुजी रिणी कहाया हे॥5॥
हुलसी माता-तुलसी जाया, मानस ग्रंथ रचाया हे।
मैणावति ने गोपीचंद को, जोगी अमर बनाया हे॥6॥
भगताँ री महिमा निज मुख सूँ, गीता में प्रभु गाया हे।
धन-धन वा बड़ भागण माता, भगत को गोद खिलाया हे॥7॥

बड़े कुल की माता-बह्नों से (लोकगीत)

(६३)

सुनो ग्यान बड़ै कुल वाली, थे धरम सनातन पालो हे।
सुनो ग्यान बड़ै कुल वाली, थे अपणौं धरम सँभालो हे॥टेर॥
बहना सति अनसूया बणज्यो, बिधि हरि हर गोद खिलालो हे॥1॥
बहना सीता सतवन्ती बणज्यो, असुराँ रो बंस मिटालो हे॥2॥
बहना सति सावित्री बणज्यो, जमराज सौं पिव नें छुटालो हे॥3॥
बहना सति दमयन्ती बणज्यो, आफत में सील सँभालो हे॥4॥
बहना सति पारबती बणज्यो, अपणों प्रण कभी न टालो हे॥5॥
बहना बेद पुराण बतावै, पिव की आग्या में चालो हे॥6॥

(६४)

सुसराजी तीरथ मानल्यो हे, हरि की प्यारी।
थाँरी सासुजी गंगा समान समझ हरि की प्यारी।
जासौं मुकती होय थाँरी॥टेर॥
जेठ पिता सम मानल्यो हे, हरि की प्यारी।

थाँरी जिठाणीं मात समान समझ हरि की प्यारी॥जा०1॥
पति परमेसर मानल्यो हे, हरि की प्यारी।
वाँरो हुकम सीस पर राख समझ हरि की प्यारी॥जा०2॥
देवर पुत्र ज्यों मानल्यो हे, हरि की प्यारी।
थाँरी देवराणी बहन समान समझ हरि की प्यारी॥जा०3॥
नणदी रो आदर राख ज्यो हे, हरि की प्यारी।
वाँरो करो सदा सम्मान समझ, हरि की प्यारी॥जा०4॥
लाज सरम मत छोड़ ज्यो हे, हरि की प्यारी।
थे तो मत करज्यो अभिमान, समझ हरि की प्यारी॥जा०5॥
घर को कारज सब करो, हे हरि की प्यारी।
थे तो छोड़ो सुख आराम, समझ हरि की प्यारी॥जा०6॥
निन्दा चुगली मत करो हे, हरी की प्यारी।
थे तो करज्यो प्रभु गुण गान, समझ हरि की प्यारी॥जा०7॥
गीता रामायण बाँचल्यो हे, हरि की प्यारी।
थे तो जपो सदा हरि-नाम, समझ हरि की प्यारी॥जा०8॥
दोय-दोय कुल ने तारज्यो हे, हरि की प्यारी।
थे तो चालो प्रभु के धाम, समझ हरि की प्यारी॥जा०9॥

बहनों का गहना

(६५)

बहनों ऐसा गहना पहनो, जासौं सुधरे सब संसार॥टेर॥
सती-धर्म की पहनो साड़ी, पती-प्रेम की लगे किनारी।
सीस सिंदूर भाल की बिन्दी, पतिव्रत तेज अपार॥1॥
सील स्वभाव आँख का सुरमा, वाणी मधुर गले का गहना।
कथा श्रवण कानों का झूमर, हरि सुमिरन का हार॥2॥
बल के बाजूबन्द पहनलो, कारीगरी के कड़े पहनलो।
सास-ससुर की सेवा का, हथफूल जड़ाऊदार॥3॥
पतिव्रत धर्म प्रेम से पालो, इसी नियम को कभी न टालो।
पतिव्रता नारी का सहज ही, होवै बेड़ा पार॥4॥

भारतीय नारी

(६६)

तुम सुनियो भारत–नारी, क्या हो गई दशा तुम्हारी॥टेर॥
रामचन्द्र अरु लक्ष्मण जैसे, तुमने गोद खिलाये थे।
भीषम अर्जुन भीमसेन से, तुमने योधा जाये थे।
पीर मजार पूजकर अब तुम, पैदा किये मदारी॥1॥
सीता द्रौपदी दमयन्ती ने, कैसा पतिव्रत धारा था।
सहे हजारौं कष्ट ये लेकिन, धर्म से पग नहिं टारा था।
पति–सेवा के बदले में अब, देत हजारौं गारी॥2॥
राजा रतनसिंह की रानी, पदमावती सयानी थी।
अपने पति को लिया छुड़ा के, वीर बड़ी मरदानी थी।
मर कर गई पति के सँग में, ऐसा पतिव्रत धारी॥3॥
इन्द्र कहे भारत की नैया, तुमहीं उबारोगी बहना।
विद्या पढ़ो पतिव्रत धारो, ये ही है उत्तम गहना।
बिन विद्या के हाय तुम्हें अब, कहते नार गँवारी॥4॥

ब्रह्मचर्य–रक्षा

(६७)

क्यों हुआ देश मतवाला, ब्रह्मचर्य नष्ट कर डाला॥टेर॥
पवन पुत्र हनुमान बली ने, कैसा बल दिखलाया था।
ब्रह्मचर्य के प्रताप से वो, लंका जाय जलाया था।
रावण कुल से अंगद का वह, पैर टला नहिं टाला॥1॥
शक्ति खाय उठे लक्ष्मण जी, कैसा शब्द मचाया था।
मेघनाद से शूरवीर को, पल में मार गिराया था।
रामायण को पढ़ कर देखो, यह इतिहास निराला॥2॥
जमदगनी सुत परसराम को, शूरवीर पहिचाना है।
बाल ब्रह्मचारी भीषम को, जानत सकल जहाना है।
उनके बल से सब जग काँपे, पड़ न जाय कछु पाला॥3॥
ब्रह्मचर्य को धारन कर लो, ये ही दवा अनूठी है।

मुरदे को जिन्दा करने में, यह संजीवनि बूँटी है।
इन्द्र कहे कमजोरी को तुम, दे दो देश निकाला॥4॥

नम्र निवेदन

(६८)

क्या कर रहे हो मेरे भाई, रहे अपना धरम मिटाई॥टेर॥
धरम बिना पथ भ्रष्ट हो गये, अधर्मियों का स्वाँग सजा।
छोड़ा सदगुन सदाचार को, दुराचार का ढ़ोल बजा।
पशू कहो या मानव कह दो, फरक नहीं है राई॥1॥
टी.वी. और सिनेमा भीतर, कलजुग आकर वास किया।
बुरे-बुरे चलचित्र दिखाकर, जीवन सत्यानाश किया।
सुर दुरलभ मानव शरीर का, अवसर रहे गमाई॥2॥
खान-पान रिस्ता पहनावा, छोड़ रहे निज नर-नारी।
बिगड़ रही संतान हमारी, हो रहे सब इच्छाचारी।
खुद ही गिर पड़ने के खातिर, खोद रहे क्यों खाई॥3॥
गीता अरु रामायण पढ़ लो, यह संजीवनी बूटी है।
साधक की अनमोल संपदा, अमर करन की घूँटी है।
जीवन सफल करो तुम अपना, सबकी करो भलाई॥4॥

आडम्बर-रहित भक्ति करें

(६९)

बुगला भगति न कीजिये, जग महँ होय हाँसी।
जम्म पकड़ ले जायसी, डाले गल बिच फासी॥टेर॥
बुगला धोली पाँख का, जाके मन कुटिलाई।
आँख मिची मोनी भयो, मछली गटकाई॥1॥
बिल्ली कथा में बैठ के, सिर दीपक राखे।
चूहो देखात दौड़ के, झट मुख महँ भाखे॥2॥
जैसे जल बिच कूंजरा, न्हावत जल पूरा।
जल से बाहर होत ही, सिर डारत धूरा॥3॥

लाख पिघल पाणी भाई, पावक के संगा।
पल छिन न्यारी होत ही, कियो पत्थर अंगा॥4॥
क्यों मन मूढ़ बिलाव ज्यों, मूसा सँग दौड़े।
कहत 'कबिरा' प्रेम से, चित्त हरि सौं जोड़े॥5॥

(७०)

क्यों पकड़ता है सहारा जगत का।
झूठ ही चोला पहन कर भगत का॥
आस कर संसार की दम घुट रहा।
छोड़ता नहिं जो निरन्तर छुट रहा॥
जब तलक सुख भोग में लेता मजा।
भुगतनी खुद को पड़ैगी यह सजा॥
जब तलक अधिकार धन की लालसा।
मूर्ख फिरता दौड़ता कंगाल सा॥
जब तलक भूखा है आदर मान का।
कैसे समझे तत्त्व भगती ग्यान का॥
छोड़ मैं मेरे की झूठी कलपना।
मान कहना है इसी में भल पना॥
फोड़दे भाँडा भरा अभिमान का।
जाग उठ खतरा है तेरी जान का॥
संत कहते खोल परदा कान का।
भूल मत तूँ अंस है भगवान का॥

चेतावनी के पद

(७१)

तेरा सत्त चित्त आनन्द रूप है, नहिं हाड मांस की काया॥टेर॥
ना तूँ जल है नायँ अगन है, ना धरती आकाश पवन है,
ना तूँ अहंकार बुधि मन है, झूठा ही भ्रम जाल है।
सब तुमने ही फैलाया॥1॥

ना तूँ पुरुष है ना तू नारी, ना तूँ धनपति नायँ भिखारी,
तूँ तो हरदम है अविकारी, नहीं तूँ बूढ़ा बाल है।
भोला किस भ्रम माहिं भुलाया ॥2 ॥
करता ओर भोगता बनकर, खाता फिरे ठौकरें दर-दर,
फिर-फिर जनम लेत मर-मर कर, बना फिरै कंगाल है।
तूँ निज स्वरूप बिसराया ॥3 ॥
तूँ तो निराकार अविनाशी, अमृत पुत्र अमरपुरवासी,
पिता है तेरा घट-घट वासी, करै सदा प्रतिपाल है।
तोहि अपना अंश बताया ॥4 ॥

(७२)

उठ जाग मुसाफिर भोर भई, अब रैन कहा जो सोवत है।
जो सोवत है सो खोवत है, जो जागत है सो पावत है॥टेक ॥
टुक नींद से अँखियाँ खोल जरा, ऐ गाफिल हरि का ध्यान लगा।
यहाँ प्रीत करन की रीत नहीं, प्रभु जागत है तूँ सोवत है॥1 ॥
नादान भुगत अपनी करनी, ऐ पापी पाप में चैन कहाँ।
जब पाप की गठरी सीस धरी, फिर सीस पकड़ क्यों रोवत है॥2 ॥
जो प्रीत लगाना है तुझको, तौ उस मालिक से प्रीत लगा।
जिसने तोहि मानुष जनम दिया, उस प्रभु को क्यों बिसरावत है॥3 ॥

(७३)

बटाऊ बीरा बाट घणीं दिन थोड़ो॥टेर ॥
होय हुँसियार हिम्मत मत हारौ, बस कर राखो घोड़ो॥1 ॥
घर अति दूर सुरज अस्थाचल, दौड़ सको तो दौड़ो॥2 ॥
निज घर पहुँच्याँ निरभय होवे, बीच रयाँ पड़सी फोड़ो॥3 ॥
पाँच दुहेली संग ना कोई, जग में जीवन थोड़ो॥4 ॥
आसाराम सरण अणघड़ की, मारग मिलियो मोडो॥5 ॥

(७४)

संसार में काईं कियो रे। राम नाम नहिं लियो रे॥टेर॥
तीरथ व्रत कबहू नहिं कीनो, गंगाजल नहिं पियो रे॥1॥
ना खायो ना खरच्यो रे मूरख, दुरबल को नहिं दियो रे॥2॥
कौड़ी-कौड़ी माया जोड़ी, देख-देख कर जियो रे॥3॥
घर वाली को नौकर बनकर, रोट्याँ साटे रयो रे॥4॥
मन्नू कहे भजन बिन फीको, सूनौ लागे थारो हियो रे॥5॥

(७५)

भजन कर! भजन कर! भजन कर ले।
चामड़े की पूतली भजन कर ले॥टेर॥
चामड़े की बाछी बछड़ा, चामड़े की गाय।
चामड़े मैं दूध आवै, चामड़ो पी जाय॥1॥
चामड़े का हाथी घोड़ा, चामड़े का ऊँट।
चामड़े का बाजा बाजे, बाजे च्यारुँ कूँट॥2॥
चामड़े का बादशाह, चामड़ा वजीर।
चामड़े का ब्राह्मण बनियाँ, चामड़ा फकीर॥3॥
चामड़े की मसक बनाई, वामें ठंडा नीर।
चामड़े की दुनियाँ सारी, चामड़ा कबीर॥4॥

(७६)

सोय मत रे, तड़को रह गयो घड़ी को।
भूल मत रे, बीरा नाम तूँ हरी को ॥टेर॥
खावे पीवे भोग-भोगे, गधा कुत्ता सूरड़ा।
काई हूग्यो रे, बानो पहर्यो जरी को॥1॥
खरच होत स्वासा छिन-छिन में।
नास होवे रे, थारी पूँजी पड़ी को॥2॥
सुख महँ फूल्यो, प्रभुजी ने भूल्यो।
जहर खायो रे, छोड़ कँद मिसरी को॥3॥

राम-नाम धन, चौड़े पड़्यो है।
हाथ लाग्यो रे, माल बाँध गठड़ी को ॥4॥

(७७)

हरि को गुण नही गाय के, तूँ तो काईं कर्यो अठे आय के ॥टेर॥
घर छोड्यो ममता नहिं छोड़ी, के हुयो मूँड मुँडाय के।
भाई के हुयो जटा बढ़ाय के ॥1॥
भेष बणायो जग ठगणें को, के हुयो बाबाजी कहाय के ॥2॥
जाण पराई नार तकत है, घर-घर हाँडत जाय के ॥3॥
प्रभु को गाय प्रसन्न न कीन्हों, के हुयो जगत रिझाय के ॥4॥
कहे पुरुषोत्तम भजो हरी को, फेर ना मरो पछिताय के ॥5॥

(७८)

ओ तन जासी रे दमड़ाँ रा लोभी तूँ दुख पासी रे ॥टेर॥
कूड़ कपट कर माया जोड़े कौड़ी ना सँग जासी रे।
आपो हि आप भुगतणी पड़सी, लख चौरासी रे ॥1॥
तूँ तो चिन्ता करे रात दिन, टाबरिया के खासी रे।
तूँ दु:ख पातो मरसी वे तो, मौज उड़ासी रे ॥2॥
खाय-खाय नित पेट बिगाड़े, मारे पड़्यो उबासी रे।
काल बली सिर ऊपर नाचे, कर रयो हाँसी रे ॥3॥
ले जासी जमदूत क्रोध कर, घाल गले बिच फासी रे।
मार टाटड़ी गंजी करसी, कूण छुटासी रे ॥4॥
हरि-भगती सतसंगत सेवा, जोड़ असल धन रासी रे।
परमेसर ही नैया थारी, पार लगासी रे ॥5॥

(७९)

हरि भज-हरि भज-हरिभज प्राणी एक दिन पिंजरो पड़ जासी।
नेकी करो बदी मत झेलो, घणी अनीती नहिं आछी ॥टेर॥
बागाँ बैठी मालण बोली, ओ ही बाग म्हारो थिर रहसी।

हरि–हरि कलियाँ चुनले हे मालन, फेर चुनण नें कुण आसी॥1॥
राज करं तो राजा बोल्यो, ओ ही राज म्हारो थिर रहसी।
न्याय नीति सूँ चालो रे राजा, फेर करण ने कुण आसी॥2॥
हाट्याँ बेठ्यो बणियूँ बोल्यो, आही हाट म्हारी थिर रहसी।
पूरो–पूरो तोल बाणियाँ, फेर तोलण ने कुण आसी॥3॥
बेद पढं तो ब्राह्मण बोल्यो, ओ पढ़णूं म्हारो थिर रहसी।
न्याय नीति से बाँचो रे पंडित, फेर बाँचण ने कुण आसी॥4॥
के ले आयो के ले जासी, नेकी बदी थारे सँग जासी।
रामानंद का भणे कबीरा, खाली हाथाँ उठ जासी॥5॥

(८०)

म्हारा भाई थे रामजी ने भूलो मत रे॥टेर॥
लाधग्यो कलजुग रो मोको, ओसर मिलग्यो है चोखो।
फेर रहज्यावे लो धोखो, छोड़द्यो चिलम बिड़ी होको।
बीरा खोटाँ रो संग कबूलो मत रे॥1॥
बाजो बड़ा घराँरा पूत, बिगड्या कर खोटी करतूत।
बणोला आँ लखणाँ सूं भूत, पकड़ ले ज्यावे ला जमदूत।
मारसी भे–भे सिरपर जूत।
बीरा लाख चौरासी में झूलो मत रे॥2॥
चढ़ाली दारूड़ी की घूँट, बण्योड़ा मतवाला ज्यूँ ऊँट।
हाँडता फिरस्यो च्यारूँ कूँट, जाण कर हिया रया क्यूँ फूट।
बीरा खोटा कामण कर फूलो मत रे।।॥3॥
एक दिन जास्यो छोड़ मुकाम, छूटसी नेतागिरी तमाम।
न आवे सरपंचाई काम, चालसी संग राम को नाम।
बीरा राम भजन करो रूलो मत रे॥4॥

(८१)

जाग रे जंजाली जिवड़ा, ओ तो मेलो हाट को॥टेर॥
हरि से पूठ फेर कर सूत्यो, बणग्यो बेटो लाट को।

ओ सरीर है हाड मांस को, तूँ तो अंस बिराट को॥1॥
नर तन पाय राम नहिं सुमरे, हुयो बरस तूँ साठ को।
धोबी के कुत्ते ज्यूँ भटके, घर को रयो न घाट को॥2॥
अंत समय रीतो रह जासी, जियाँ बटाऊ बाट को।
ले उठाय घर बाहेर करसी, आगे गाडो काठ को॥3॥
ओ मेलो खिंडतो ही रेसी, दोय चार दिन आठ को।
करले श्रवण भागवत गीता, रामायण के पाठ को॥4॥

(८२)

तज दिये प्रान काया कैसे रोई रे॥टेर॥
तज दिये प्रान काया कैसे रोई, छोड़ चला निरमोही।
मैं जानी मेरे संग रहेगो, जेहि कारन नित मल-मल धोई रे॥1॥
ऊँचा नीचा महल भी छोड़ा, गाय भैंस घर घोड़ी।
रूपवती सी नारी छोड़ी, छोड़ी तड़फती दोय पुत्रों की जोड़ी रे॥2॥
चार जनों के कंधे ऊपर, चढ़ा काठ की घोड़ी।
नदी किनारे जाइ उतारे, फूँकदई है जैसे फागुन की होरी रे॥3॥
घर की तिरिया रोवन लागी, बिछुड़ गई मेरी जोड़ी।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, जिन्ह जोड़ी तिन्ह छन माहिं तोड़ी रे॥4॥

(८३)

हमका ओढ़ावै चादरिया रे, चलती बिरियाँ॥टेर॥
प्रान राम जब निकसन लागे, उलटि गई दोऊ नैन पुतरिया॥
भीतर ते जब बाहिर लाये, छूटि गई सब महल अटरिया॥
चारि जने मिल खाट उठाइन, रोवत लै चले डगर डगरिया।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, संग चली वह सूखी लकरिया॥

(८४)

मुखड़ा क्या देखे दरपन में, तेरे दया धरम नहिं मनमें॥टेर॥
पेच मार कर पगड़ी बाँधे, तेल डाल जुलफन में।

इसी बदनपर दूब उगेगी, गऊ चरैगी बन में॥1॥
कंकण कड़ा कान की बाली, ले उतार पल छिन में।
काची काया काम न आवै, नंग घरे आँगन में॥2॥
कागज की इक नाव बनाई, छोड़ी समंदर जल में।
धरमी-धरमी पार उतर गये, पापी डूबे पल में॥3॥
कौड़ी-कौड़ी माया जोड़ी, गाड़ के धरी भवन में।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, रह गई मन की मन में॥4॥

उस दिन को याद करो

(८५)

कुछ उस दिन की भी सार करौ।
लेखा-जोखा धरमराज को, सँभलाना तैयार करौ॥टेर॥
क्या करने जग में आये थे, क्या आग्या प्रभु की लाये थे।
गरभ माहिं जब कौल किया था, अब तुम क्यों इनकार करौ॥1॥
पूरन काम हुआ क्या अपना, बोलौ बाकी क्या है कितना।
देखौ समय भागता जाता, कुछ तो सोच-विचार करौ॥2॥
क्षण भंगुर यह जीवन भाई, सब जीवों की करौ भलाई।
बुरा किसी का कभी न सोचो, सबसे हित व्यवहार करौ॥3॥
खाते सदा नमक हो जिसका, काम करौ तन-मन से उसका।
मिला हुआ अपना मत मानो, झूठा मत अधिकार करौ॥4॥
करम करैं वह बल भी प्रभुका, सुभ करमों का फल भी प्रभुका।
हम भी प्रभुके सब कुछ प्रभुका, प्रभुसे सब मिल प्यार करौ॥5॥

हरि-भक्ति के रंग

(८६)

अब तो लाग्यो नाहीं छूटे जी, हरि भगती रो रंग॥टेर॥
रँग लाग्यो प्रहलाद भगत के, कियो पिता ने तंग।
अगनी माहीं जली होलका, भसम हुयो सब अंग॥1॥
रँग लाग्यो मीरां बाई के, पहर्‌यो हार भुजंग।

गट-गट पी गई विष को प्यालो, कर संतन को संग ॥2 ॥
रँग लाग्यो रैदास भगत के, आँगण प्रगटी गंग।
दरसी भीतर मायँ जनेऊ, चीर दियो निज अंग ॥3 ॥
करमा कूट्यो खीचड़ो, हिय में भरी उमंग।
रूच-रूच भोग लगावे ठाकुर, अजब भगति रो ढ़ंग ॥4 ॥

हरि-माया का खेल

(८७)

हरि-माया का खेल, खिलौना माटी का।
अजब रचाया खेल, खिलौना माटी का ॥टेर ॥
संस्कार जीवों का जैसा, फोटो बना दिया है वैसा।
मानव जनम दुहेल ॥1 ॥
पाँच तत्त्व का बना खिलौना, शादी करके कर दिया गौना।
नाक में पड़ी नकेल ॥2 ॥
भये निरंकुश लड़की-लड़के, नारि मरद से कहे अकड़ के।
घर है या कोई जेल ॥3 ॥
पति पतनी में हुई लड़ाई, घर वाली रोटी नहिं खाई।
पापड़ रहि है बेल ॥4 ॥
नारायण का भजन न कीन्हा, राम नाम मुखसे नहिं लीन्हा।
रहा मुसीबत झेल ॥5 ॥
कंचन सी यह काया तेरी, इक दिन हो माटी की ढेरी।
करले प्रभु से मेल ॥6 ॥

छल-कपट छोड़ो

(८८)

छलबाजी करणीं छोड़ो जी, मिनख कहाओ मोटा।
कपटाई करणीं छोड़ो जी, मिनख कहाओ मोटा।
सुणो नहीं सन्ताँ री बाणी, हुया धान रा कोठा जी० ॥टेर ॥
जो कहवे सतसंग करण री, भाग बताओ खोटा।

पोता-पोती ने परणाद्यां, टाबर रहग्या छोटा जी० ॥1॥
लुक छिप कर कुचमाद करो थे, लेय धरम का ओटा।
इक दिन फूटे घड़ो पाप रो, जम मारे ला सोटा जी० ॥2॥
औरांँनें तो मुरख बताओ, आप अकलरा पोटा।
मरणें रा दिन नेड़ा आवे, पड़ रया भारी टोटा जी० ॥3॥
तोथी बात्याँ करो निकम्मी, झूठ गुड़ाओ गोटा।
इण लखणाँ सूँ भला न बाजो, बणे नतीजा खोटा जी० ॥4॥
सतसंगत कर राम नाम का, भरल्यो भीतर कोठा।
अमरापुर में बास करोला, फेर न आवो ओठा जी० ॥5॥

माताओं को चेतावनी

(८९)

जागिये माताओं बहनों, नींद में क्यों सो रही।
जन्म देना बन्द कर तुम, क्यों निपूती हो रही॥
जागिये हे मातृशक्ति, नींद में क्यों सो रही।
वंश सत्यानाश कर तुम, क्यों निपूती हो रही॥टेर॥
तुम हमारी जन्म दाता, युग-युगों से हो सदा।
क्या बड़ा पत्थर पड़ा, अफसोस हमको है यही।॥1॥
माँ अगर बनती नहीं तुम, हो कहो किस काम की।
क्षणिक सुख की लालसा से, बीज विष के बो रही॥2॥
गर्भ पात कराय के तुम, डाकिनी क्यों बन रही।
खा रही बच्चों को खुद, माता की प्रतिभा खो रही॥3॥
है भयंकर पाप इसका, ब्रह्महत्या से बड़ा।
कर के अपनी दुर्गती क्यों, पाप सिरपर ढो रही॥4॥
छोड़ कर सुख भोग लिप्सा, गर्भ की रक्षा करो।
अन्न जल भगवान देते, बात सच्ची यह सही॥5॥

गर्भपात-निषेध (राजस्थानी में) छप्पय

(९०)

गर्भ-पात महापाप है, सब पापाँ रो बाप।
बालक की हत्या करे, मुँह देखण रो पाप॥
मुँह देखण रो पाप जिणाँ घर जल मत पीज्यो।
ब्याह सगाई होय निमंत्रण कदै न दीज्यो॥
बचो घोर महापाप सूँ, भाई बहनां आप।
गर्भ-पात महापाप है, सब पापाँ रो बाप॥

(९१)

और पाप छोटा बड़ा, गर्भ-पात अति घोर।
गर्भ-गेर राजी हुवे, नहीं नरक में ठौर॥
नहीं नरक में ठौर हुया नर-नारि निपूता।
पकड़-पकड़ जमदूत मारसी सिरपर जूता॥
असुराँ सूँ नीचा हुया, माणस रया न ढ़ोर।
और पाप छोटा बड़ा, गर्भ-पात अति घोर॥

(९२)

गर्भ-गिरावै जाण कर, वा मायड़ मत जाण।
कलजुग में परगट हुई, बक्कासुर की भाण॥
बक्कासुर की भाण पूतना ब्रज में आई।
थन के जहर लगाय कृष्ण को मारण धाई॥
चूसण लाग्या कान्हजी, खेंच लिया सब प्राण।
गर्भ-गिरावै जाण कर, वा मायड़ मत जाण॥

गर्भस्थ शिशु की आह

(९३)

डाकटर तो डाकी बणग्यो, डाकटरणी डाकण।
बाप कालो स्याप बणग्यो, माय काली स्यापण॥
गरभ-गिरायो हत्या कर दी, अे पापी अरु पापण।
देख्या हीं इण जल्लादा नें, हिरदो लागे काँपण॥

कान्हाजी से प्रार्थना

(९४)

कान्हाजी थाँरी भगती देवो निसकाम।
किरपा ईसी करद्यो जी, ओजी म्हारा स्याम॥
कान्हाजी थाँने सिंवरूँ आठौं याम।
किरपा ईसी करद्यो जी, ओजी म्हारा स्याम॥
कान्हाजी थाँरी पूजा करूँ, आठौं याम।
चाकर म्हाँने राखो जी, ओजी म्हारा स्याम॥
कान्हाजी थाँरो जपूँ निरंतर नाम।
किरपा ईसी करद्यो जी, ओजी म्हारा स्याम॥
कान्हाजी म्हारा लोभी ने ज्यूँ दाम।
इस्या प्यारा लागो जी, ओजी म्हारा स्याम॥
कान्हाजी म्हारा कामी ने ज्यूँ काम।
इस्या प्यारा लागो जी, ओजी म्हारा स्याम॥
कान्हाजी थाँरो सोहत रूप ललाम।
नैणाँ भीतर रीज्यो जी, ओजी म्हारा स्याम॥
कान्हाजी थाँरो दिव्य वृन्दावन धाम।
म्हाँने थे दरसाद्यो जी, ओजी म्हारा स्याम॥
कान्हाजी थाँरे चरणाँ में पाऊँ बिसराम।
करुणाँ ईसी करद्यो जी, ओजी म्हारा स्याम॥

प्रभु से दीनतापूर्वक प्रार्थना

(९५)

हे कृपासिन्धु कर प्यार, थे मनें अपणाल्यो।
म्हारा मात-पिता कर प्यार, थे मनें अपणाल्यो॥टेर॥
मैं अपराधी हूँ, अगणित जनमाँ रो, नख-सिखमें भर्‌या विकार॥1॥
आँधो हो रयो हूँ, विषय सुख भोगाँ में, हूँ आदत सूँ लाचार॥2॥
होणीं जाणीं जी, कुछ नहिं म्हारे में, ल्यो मार डाँट पुचकार॥3॥

एसो बिगड़यो हूँ, ढूँढ़यो नहीं मिले, चाहो देओ और बिगाड़ ॥4॥
दल-दल माहीं जी, नीचो उतर रयो, गहो लम्बा हाथ पसार ॥5॥
पल-पल छिन-छिन जी, भारी होय रयो, कोइ बस नहिं चले हमार ॥6॥
सरस बणाद्यो जी, सूखा लकड़ा नें, करो करुणाँ री बौछार ॥7॥
हर्यो-भर्यो करद्यो, सूखा लकड़ानें, बरसाद्यो प्रेम री धार ॥8॥
भलो आदमी जी, जगका लोग कहे, म्हारो चूर करो अहँकार ॥9॥
किणरे आगे जी, आँसुड़ा ढलकाऊँ, सब धोखे रो संसार ॥10॥
हूँ जिस्यो ही हूँ, आपरे चरणाँ में, चाहो तो लेओ सुधार ॥11॥
सपने में भी जी, आपनें नहिं भूलूँ, देओ इसी मोहिनी डार ॥12॥
ज्यूँ बुलवाओ जी, त्यूँ हीं बोल रयो, प्रभु आपहि बोलन हार ॥13॥

प्रभु से आत्मीयतापूर्वक उद्गार

(९६)

म्हे तो थाँरा हाँ हे नाथ, म्हे तो थाँरा ही रेस्याँ ॥म्हे.॥
म्हे तो हाँ जीस्या ही नाथ, हरदम थाँरा ही रेस्याँ ॥म्हे.॥
पेहली भी म्हे थाँरा ही हा, अब ही थाँरा थाँरा हाँ।
महाप्रलय हो ज्यासी तो भी, थाँरा ही रेस्याँ ॥1॥
कुण मूरख है थाँने तज, औराँ ने अपणाँ माने हो।
वाँरो छोड़ कुसंग थाँरे, भगताँमें रेस्याँ ॥2॥
माता की गोदी स्यूँ म्हाँनें, हटा सके नहिं कोई हो।
सबके आगे ढ़ोल बजा कर केहता ही रेस्याँ ॥3॥
भूत प्रेत अरु काल बली को, डर नहिं म्हाँने लागे हो।
पल्लो थाँरो पकड़ मटरका, करता ही रेस्याँ ॥4॥
मौज मस्तिमें अब तो म्हाँरी, रग-रग भीतर नाचे हो।
कमरे भीतर आडो ढ़क कर, नाचता रेस्याँ ॥5॥
थाँसूँ बिमुख हुयोड़ा जिवड़ा, नरकाँ माहीं जावे हो।
सबनें मुकत करो या अरजी, करता ही रेस्याँ ॥6॥

थाँरा ही पकड़्योड़ा अब म्हे, छूट सकाँ नहिं थाँस्यूँ हो।
आठयूँ पहर जुड़्योड़ा थाँरे, चरणाँ में रेस्याँ॥7॥

सत्संग करनेवाले भाई-बहनों से निवेदन

(९७)

सतसंग हित इस भवन में, ठहरें जन समुदाय।
सावधान हरदम रहे, लांछन ना लग जाय॥

सफाई का ध्यान—
कमरा साफ रखो सदा, जहँ-जहँ करो निवास।
मक्खी मच्छर तिलचटा, करै नहीं घरवास॥

शौच जाने के बाद—
शौचालय गन्दा करै, लगे तीर्थ पर पाप।
स्वच्छ करौ जल डालकर, निरमल होंगे आप॥

स्नान करते समय—
जल थोड़ा लो काम में, झठ न्हावो पट धोय।
औरों की सेवा बने, पुन्य आपको होय॥

प्रस्थान के समय—
कमरा खाली जब करो, कूड़ा साफ कराय।
मैनेजर को खबर दो, चाबी दो सँभलाय॥

म्हारी सच्चिदानन्दमयी माता

(९८)

सच्चिदानन्दमयि म्हारी माय, मैं थाँरै बिना रह न सकूँ।
हे करुणामई म्हारी माय, मैं थाँरै बिना रह न सकूँ।
करुणामई अति प्रेममई थे, कृपामई म्हारी माय, मैं० ॥टेर॥
रह न सकूँ अब जी ना सकूँ मैं, कीयाँ बताऊँ कह न सकूँ मैं।
राखो थे हिये सूँ लगाय, मैं० ॥1॥
मैं अबोध अति बालक थाँरो, मैं चंचल मति बालक थाँरो।

मैं उद्दण्ड अति टाबर थाँरो, मैं भोलो अति टाबर थाँरो।
मैं मूरख अति टींगर थाँरो, छोड़ मत दीज्यो म्हारी माय, मैं० ॥2 ॥
चाहो तो हँस कंठ लगाल्यो, चाहो द्यो आँख दिखाय, मैं० ॥3 ॥
चाहो तो थे लाड लडाल्यो, चाहो तो चपत लगाय, मैं० ॥4 ॥
चाहो तो रखल्यो भूखो प्यासो, चाहो तो लाडू जिमाय, मैं० ॥5 ॥
चाहो रहणद्यो गूँगो बावलो, चाहो द्यो म्हातमा बणाय, मैं० ॥6 ॥
चाहो तो रखल्यो मैलो कुचेलो, चाहो तो देवो चमकाय, मैं० ॥7 ॥
जियाँ भी राखो आपकी मरजी, राखो आँचल में छिपाय, मैं० ॥8 ॥

(९९)

करौं प्रभु कोटिन-कोटिन नमन ॥टेक ॥
हो गए, अब हैं, आगे होंगे, सब सन्तन को नमन ॥1 ॥
हो गए, अब हैं, आगे होंगे, सब भक्तन को नमन ॥2 ॥
और न जानौं अस्तुति पूजा, और न जानौं भजन ॥3 ॥
निरखौं नित प्रति कृपा आपकी, निरखत रहवौं मगन ॥4 ॥
क्या जानौं सन्तन की महिमा, क्या जानौं अभिनन्दन ॥5 ॥
ना कोइ भीतर सद्गुन मेरे, ना कोइ शुद्ध आचरन ॥6 ॥
ज्यों बुलवाओ, त्यों ही बोलूँ, मेरा कुछ नहिं कथन ॥7 ॥
ज्यों रखिये त्यों रहौं निरन्तर, पड़ा आपकी शरन ॥8 ॥

तर्ज-नमामीशमीशान

(१००)

बचाओ मेरे नाथ जल्दी बचाओ
इस संसार के सुख की आसा छुटाओ ॥
ये घाटी कठिन है करूँ पार कैसे।
बताओ मैं पाऊँ तेरा प्यार कैसे ॥
मुझे प्रेम भगती का मारग दिखाओ ॥ इस० 1 ॥

क्यों देरी करो ये समझ में न आता।

उठादो सभी मेरे करमों का खाता॥
वे अपराध मेरे सभी भूल जाओ॥ इस० 2॥

पड़ा हूँ शरण नाथ तुम हीं संभारो।
करौ महरबानी कृपा दृष्टि डारो॥
तुम्हारी ही मरजी है जैसे नचाओ॥ इस० 3॥

मेरे और कोई ना दूजा सहारा।
बिना आपके है ना कोई हमारा॥
बचाओ बचाओ बचाओ बचाओ॥ इस० 4॥

प्रियवर की याद

(१०१)

अब तौ चैन परै नहिं हमको, तुम बिनु कृष्ण मुरारी रे।
छैल छबीले नन्द के लाला, दर्शन दे बनवारी रे॥टेर॥
धन जन मित्र कुटुम्ब सुत-दारा, सबसौं मन उकतावै है।
खान पान रस भोग जगत के, जहर समान लखावै है।
ऊठत बैठत सोवत जागत, लागै सुरति तिहारी रे॥1॥
नकल प्रेम सौं तूँ नहि रीझै, असल प्रेम मुझमें नाही॥
तुहीं बता अब लाऊँ कहाँ ते, मिलै नहीं दुकान माही।
नकली ने तूँ असल बना दे, हे पतितन्ह हितकारी रे॥2॥
लगा दिया है अब तौ मैंने, तेरे चरनों में डेरा।
क्यों अब देर करौ मनमोहन, तड़फ रहा है दिल मेरा।
'श्यामसखा' मेरे जीवन धन, तेरी मेरी यारी रे॥3॥

(१०२)

याद सतावै रे! तेरी याद सतावै रे।
नव छैला श्याम बिहारी तेरी, याद सतावै रे॥टेर॥
जग की चरचा पड़ै कान में, जिय घबरावै रै।
तेरी ही मधुरी लीला सुन-सुन आनन्द आवै रे॥1॥

मोद विनोद उछाह जगत के नायँ सुहावै रे।
जब उठे कलेजे आग तेरे बिनु कौन बुझावै रे॥2॥
घरमें रहौं फिरौं बाहर कहुँ चैन न आवै रे।
इस तन की बिगड़ै दशा निरन्तर, प्रान न जावै रे॥3॥
क्यों छलिया छुप कर बैठो, आँखियाँ मटकावै रै।
'श्यामसखा' दरशन दो प्यारे, क्यों तरसावै रे॥4॥

दर्शन-लालसा

(१०३)

हे प्यारे तेरे दरशन केहि बिधि पाऊँ।
चित्त विषयन में उलझि पर्‌यो है, मैं सुलझा नहिं पाऊँ॥टेर॥
घर परिवार कुटुम्ब में मिलकर, कैसे अलग रहाऊँ।
हुकम करौ तो पिण्ड छुटाऊँ, भागि कहाँ पै जाऊँ॥1॥
मान बड़ाई सुन-सुन मन में, फूला नायँ समाऊँ।
उपर-उपर तेरे गुन गाऊँ, भीतर जगत रिझाऊँ॥2॥
मेरे हृदय में ठौर आपकी, बसि गये चौर बटाऊ।
विरद रखो तो बेगि बचावौ, चलत न मोर उपाऊ॥3॥

प्रियवर से अपनी स्थिति का वर्णन

(१०४)

श्याम तोहि अपनी व्यथा सुनावौं॥
अति अनन्त तव कृपा प्रीति का, आदर कर नहिं पावौं॥
पढ़ौं पढ़ावौं सुनौं सुनावौं, आचरनन नहिं लावौं॥
तुम्ह ते विमुख रहत जो हरदम, उन्ह संग वक्त बितावौं॥
भव अंबुधि उत्ताल तरँग बिच, बहि-बहि गोता खावौं॥
साधन कछु नहिं बनै न मोपै, ऊपर हाथ उठावौं॥
जैसा हौं आखिर हौं तेरा, तोहि बल जिवित रहावौं॥

तुम्ह बिनु मेरा और न कोई, किन्ह के हाथ बिकावौं।
एक बार कह दो तूँ मेरा, सब दुख सौं छुटि जावौं॥
'श्यामसखा' मैं शरण तुम्हारी, अब क्या कहौं कहावौं॥

(१०५)

मेरा तुम पर दारोमदार, प्यारे तुमपर दारोमदार।
मैं तो तेरा खेल खिलौना, तुमही खेलन हार॥टेर॥
मैं तो तेरी चकरी फिरकी, तुहीं घुमावन हार।
इधर घुमाओ उधर घुमाओ, करौं नहीं इनकार॥1॥
मैं तो तेरा झुनझुनियाँ हूँ, तुहीं बजावन हार।
पकड़ लिया तुमने अब मुझको, कौन छुड़ावन हार॥2॥
मैं तो तेरी कठपुतली हूँ, तुहीं नचावन हार।
थिरक-थिरक कर खूब नचाओ, डौरी हाथ तुम्हार॥3॥
मैं तो हूँ फुटबाल तुम्हारा, तुम हो चतुर खिलार।
युगल चरन में रहौं लुढ़कता, रखता तुहीं संभार॥4॥

(१०६)

मैं तेरा हूँ मैं तेरा! तूँ मेरा है तूँ मेरा॥टेर॥
मैं भूखा हूँ तो तेरा, मैं प्यासा हूँ तो तेरा।
मैं काम करूँ तो तेरा, कुछ नहीं करूँ तो तेरा॥1॥
मैं खड़ा रहूँ तो तेरा, मैं पड़ा रहूँ तो तेरा।
मैं व्यस्त रहूँ तो तेरा, अलमस्त रहूँ तो तेरा॥2॥
मैं रोगी हूँ तो तेरा, रस भोगी हूँ तो तेरा।
मैं चुप्प रहूँ तो तेरा, बढ़कर बोलूं तो तेरा॥3॥
स्वीकार करौ तो तेरा, इनकार करौ तो तेरा।
ठौकर मारौ तो तेरा, अति प्यार करौ तो तेरा॥4॥

(१०७)

तेरी शरन पड़ा हूँ अब मुझको क्या फिकर है।

तेरा ही गीत गाऊँ, दूजा नहीं जिकर है॥टेर॥
जो दीखता जगत में, सबही को काल खाये।
तेरा लिया सहारा, वो ही सदा अमर है॥1॥
मैं तो सदा ही तेरा, बिनु मोलका हूँ चेरा।
जो कुछ करो करालो, कोई नहीं उजर है॥2॥
व्यापक सभी जहाँ में, तूँ ही झलक रहा है।
तुमको कोई न जाने, सबकी तुम्हें खबर है॥3॥
तेरा ही अंश हूँ मैं, हकदार तेरे दर का।
तेरी ही गोद बैठा, किसका रहा न डर है॥4॥

(१०८)

नन्द के कन्हैया मैं तो, लीन्हो तेरौ आसरौ॥टेर॥
तूँ ही मेरे माता-पिता, तूँ ही बन्धु अन्नदाता।
मेरे तो भरौसो एक, कमलनिवास रौ॥1॥
रजनी के चन्द को है, भँवरे के सुगंध को है।
इन्द्रियों के मन को है, देहके ज्यों स्वास रौ॥2॥
प्रजा के ज्यों भूप को है, कबूतर के कूप को है।
गनिका के रूप को है, पशु के ज्यों घास रौ॥3॥
नारी के ज्यों पति को है, कवि के ज्यों मति को है।
ऐसो बिसवास तो पै, कृष्ण तेरे दास रौ॥4॥

माया-पति परमेश्वर

(१०९)

सब जीव देख भरमाया जी, हरि अजब आपकी माया॥टेर॥
थे पहर अनोखा बाना, धर लिया भेष थे नाना।
थाँरा सन्त निरख सुख पाया जी॥1॥
थे कामण गारा मोटा, नृप दसरथ जी रा ढ़ोटा।
कौसल्या गोद खिलाया जी॥2॥

थे कामण गारा मोटा, बाबा नन्दजी रा ढ़ोटा।
थाँनें जसुमति गोद खिलाया जी॥3॥
थाँने आवै अगनित लटका, थे भेष घारल्यो नट का।
थाँरी लीला देख लुभाया जी॥4॥
थाँने आवै अगनित बाजा, थाँरा दिव्य जनम अरू काजा।
लख फेर जनम नहिं पाया जी॥5॥
थाँरी अजब अलौकिक क्रीड़ा निरखत नासै भव पीड़ा।
वाँने लगे न जग की छाया जी॥6॥
थाँरी अजब अलौकिक गीता, पढ़ रया न कोई रीता।
सब आपहि आप लखाया जी॥7॥

पूर्ण शरणागति

(११०)

प्यारे नटवर लाल, तेरे नचायो नाचूँ।
मेरे गिरधर लाल, तेरे नचायो नाचूँ॥टेर॥
तेरे घर पर रहौं निरंतर, तेरी हाट चलाऊँ।
तेरे धन से तेरे कुटुम्ब की सेवा टहल बजाऊँ॥1॥
जिस रंग के कपड़े पहिनावे, सोई स्वाँग सजाऊँ।
जैसे बोल बुलावै मुख सौं, वैसी बात बनाऊँ॥2॥
रूखा सूखा जो कुछ देवे, तेरे भोग लगाऊँ।
खीर पुआ या छाछ मधुकरी, बड़ै प्रेम से पाऊँ॥3॥
घर के लोग कहा नहिं माने, मन-मन खुशी मनाऊँ।
तेरे इस मंगल विद्यान में, मैं क्यों टाँग अड़ाऊँ॥4॥
जो तूँ ठोकर मार गिरावै, लकड़ी ज्यों गिरजाऊँ।
जो तूँ मस्तक उपर बिठावै, तो भी ना शरमाऊँ॥5॥
दूर हजार कोस लै जावै, दौड़ा-दौड़ा जाऊँ।
जो तूँ आसन मार बिठावै, घुटना नायँ हिलाऊँ॥6॥
जो तूँ तन कै रोग लगावै, कम्बल ओढ़ सो जाऊँ।
जो तूँ काल रूप बन आवै, लपक गोदमें आऊँ॥7॥

उलटा सुलटा जो कछु करले, मंगलरूप लखाऊँ।
तेरी मन चाही में प्यारे, मेरी चाह मिलाऊँ॥8॥

विश्व के निर्माणकर्ता

(१११)

हे मेरे जीवन धन प्राण, कैसा अजब रचा निरमाण॥टेर॥
हो रहि सकल विश्व में हलचल, उछल कूद रहे आपहि के बल।
मेटो निज जन का अभिमान॥1॥
दीख रहा चहुँ ओर नजारा, अगनित नाम रूप गुन न्यारा।
सबमें व्यापक आप समान॥2॥
आप पिता अरु आपहि माता, जुड़ा आपसे अगनित नाता।
जो भावै सोइ लीजौ मान॥3॥
कब तक छुपे रहौगे प्यारे, आपहि के हम आप हमारे।
दो अपने चरनन में स्थान।
प्रेम-भक्ति निज करौ प्रदान॥4॥

प्रभुकी आश्चर्यमयी कृपा

(११२)

अचरज आवै जी, बड़ा मोहि अचरज आवै जी।
मेरे प्रभु की कृपा देख कर मुझको, अचरज आवै जी॥टेर॥
भूले-भटके जीव-जन्तु दारुन दुख पावैं जी।
तब बिनु कारण करुना कर उनको मिनख बनावै जी॥1॥
पापी सौं पापी जो प्रभु के शरण में आवै जी।
कर मुक्त सकल पापों से उनको सन्त बनावै जी॥2॥
जो हर वक्त अनन्य भाव सौं हरि कौ ध्यावै जी।
सब योग-क्षेम का भार ढोय भव-पार लगावै जी॥3॥
अंत समय हरि-नाम लेत बंधन कट जावै जी।
है कौन बड़ै दातार प्रभु सम, कोई बतावै जी॥4॥

वासुदेवः सर्वम्

(११३)

देखौं तुमको कहाँ-कहाँ पै जाय।
घट-घट में व्यापक हो रहे हो मेरे स्याम।
तुमही-तुम व्यापक हो रहे हो प्यारे स्याम।
खोजौं तुमको कहाँ-कहाँ पै, जाय घट-घट० ॥टेर॥
खेल रहे हो जीव जगत का खेल।
योगीजन भी लख ना सके जी मेरे स्याम॥1॥
अगन पवन जल धरनी अरु आकास।
तेरी ही सुषमा छा रही जी सुन्दर स्याम॥2॥
नर-नारी पसु पंछी कीट पतंग।
तुमही बहु रूप बना रहे हो मेरे स्याम॥3॥
परवत जंगल दरखात के सब पात।
हरियाली यह सब आपकी जी मेरे स्याम॥4॥
कल-कल बहवे गंगाजी की धार।
तेरे ही सबद सुहावने जी मेरे स्याम॥5॥
रोम-रोम में कोटि-कोटि ब्रह्माण्ड।
कहुँ पार न कोई पा सके जी मेरे स्याम॥6॥
मिट गई अब तो भोग मोक्ष की चाह।
तुमहीं मेरे मन भा रहे हो सुन्दर स्याम॥7॥

अपने प्रभु अपने भीतर

(११४)

प्यारे कहाँ छुप गये मेरे श्याम, खोजत तोही ढूँढ थका॥टेर॥
कोई निरगुन सगुन बतावै, निराकार साकार।
कोई कहे दोय भुज तेरे, कोई बतावै भुजा चार॥1॥
कोई जीव प्रकृति ईश्वर बिच, बरने भेद अनेक।

कोई कहै जगत सब झूठौ, साँचो तो ब्रह्म है एक॥2॥
कोई कहै बैकुण्ठ में तुम, रहते रमानिवास।
कोई कहै क्षीर सागर में, नित्य तुम्हारौ है वास॥3॥
कोई कहै दशरथ का बेटा, कोई कहै नन्दलाल।
कोई कहै मेरे तो घर में, छोटे से लड्डू गोपाल॥4॥
कृपा करी गुरुजन ने मेरा, मेटा भ्रम संताप।
अब तो सबही ठौर मोकूँ, दरस रहे हो प्रभु आप॥5॥
मेरे ही भीतर ढूँढ़ सका॥

विराटरूप भगवान की आरती

(११५)

जय विराट रूपा, प्रभु जय विराट रूपा।
विविध रूप से शोभित, हरि त्रिभुवन भूपा॥ जय.
एक अनेक होउँ मैं, अस संकल्प भयो।
अतिहि अगाध प्रेम को, रस विस्तार कियो॥ जय०
जड़ चेतन जो दरशे, यह प्रपंच सारा।
आप अपनमहुँ कीन्हा, सब जग विस्तारा॥ जय०
सकल दार्शनिक मत महुँ, कुछ नहिं भेद रह्यो।
प्रभु से भिन्न न कोई, जग-भ्रम दूर भयो॥ जय०
यह अवतार आदि तव, लखि न सकै कोई।
जेहि पर कृपा आपकी, जानि सकै सोई॥ जय०

श्याम से नित्य सम्बन्ध

(११६)

हमारे श्याम से लगी बाजी।
वे सब चतुरन के दादा गुरु, हम मूरख अति पाजी।
वे तौ दयासिन्धु करुनानिधि, हम मद मत्त मिजाजी।
मेरा उनसे नित्य सम्बन्ध है, खबर सुनी यह ताजी।

हम हैं उनके वे ही हमारे, साक्षि भई गंगाजी।
बीच दलाल रहा नहिं कोई, हम दोनौं मिल राजी।
उनमें हममें भेद नहीं है, द्वैत बुद्धि उठ भाजी।
'श्यामसखा' कहि गुप्त बात यह, गुरुजन मात पिताजी।

(११७)

हमारी श्याम से भई यारी।
उन बिनु चैन परै नहिं हम कहुँ, पल-पल लागत भारी।
सकल बिसय सुख भोग जगत के, बिष सम लागत खारी।
सुत दारा वित्त कुटुम्ब सभी सौं, टूटी नातै दारी।
छू मन्तर भइ आसुरि संपति, सूक्ष्म बासना सारी।
'श्यामसखा' गिरिधरन लाल पर, पल-पल जावौं वारी॥

अलबेला यार

(११८)

हमारा यार है अलबेला।
हरदम सबके भीतर रहता, फिर भी सहज अकेला॥1॥
पूत सपूत यशोदा नँद का, सान्दिपन का चेला॥2॥
राधा पति गोपी गोकुल पति, ब्रज मण्डल का छैला॥3॥
श्यामल गात पीत पट शोभित, कोमल अंग लचैला॥4॥
नाथ दिया यमुना के भीतर, कालिय नाग विषैला॥5॥
'श्यामसखा' नित संग हमारे, अजब रचावै खेला॥6॥

प्यारे किसना

(११९)

छोटा-सा किसना प्यारा, देवकी का हो तुम लाला॥
कानों में कुण्डल सोहे, माथे मोर मुकुट है आला॥
हाथों में बंसी सोहे, गले में बैजन्ती माला॥
कटि में पीताम्बर सोहे, तुम हो काली कमली वाला॥

पाँवन में पैंजनियाँ बाजे, छम-छम नाचे मधुरी ताला॥

(१२०)

सुनादे-सुनादे-सुनादे किसना।
तूँ बाँसुरी की टेर सुनादे किसना॥टेर॥
बाँसुरियाँ स्याम बजावे, तूँ सबको मस्त बनावे।
बनादे-बनादे-बनादे किसना।
इस दुनियाँ को मस्त बनादे किसना॥1॥
तूँ ग्वालिन के घर जावे, तूँ दही लूट कर खावे।
चखादे-चखादे-चखादे किसना।
थोड़ासा दही हमको चखादे किसना॥2॥
बंसीवट रास-रचावे, गोपिन को नाच नचावे।
नचादे-नचादे-नचादे किसना।
तूँ प्रेम से नाच नचादे किसना॥3॥

परमात्मा दूर नहीं

(१२१)

लोग कहे हरि दूर बसत है, हरि तो बसे हिरदे माहीं॥
अंतर गाँठें लगी कपट की, जासौं हरि सूझै नाहीं॥टेर॥
कर गाँठों को दूर अरे नर, कर गाँठों को दूर,
होय मंजूर अभी हरि मिल जावे।
झूठा आडम्बर करने से, नहीं नजर हरगिज आवे।
साँचे प्रेम बिना निज प्रभु की, नहीं छुहेगी परछाईं॥1॥
किससे कपट करै मन मूरख, जो सबके अन्तरयामी।
सकल सृष्टि के करता हरता, मात पिता सबके स्वामी।
साँचे मन से टेर अरे मन, साँचे मन से टेर,
लगे नहिं देर निकट तेरे साईं॥2॥
सरल भाव से रीझे प्रभुजी, सरल भाव से रीझे प्रभुजी,
कपटी से अति दूर रहे।

चार वेद छह शास्त्र पढ़ै या, सकल कला भरपूर रहे।
अंहकार के दुशमन हैं प्रभु, दीन जनों के सुखदाई॥3॥

वैष्णवजन की पहचान

(१२२)

वैष्णव जन तो तेने कहिये जे, पीड़ पराई जाणे रे।
पर दुःखे उपकार करे तोये, मन अभिमान न आणे रे॥टेर॥
सकल लोक माँ सहुने वंदे, निंदा करै न केनी रे।
वाच काछ मन निश्चल राखे, धन-धन जननी तेनी रे॥1॥
समदृष्टि ने तृष्णा त्यागी, परस्त्री जेने मात रे।
जिह्वा थकी असत्य न बोले, पर धन नव झाले हाथ रे॥2॥
मोह माया व्यापे नहिं जेने, दृढ़ वैराग्य जेना मनमा रे।
राम नाम सुं ताली लागी, सकल तीरथ तेना तनमाँ रे॥3॥
वणलोभी ने कपट रहित छे, काम क्रोध निवार्या रे।
भणे 'नरसैयो' तेनु दरसण करता, कुल एकोतेर तार्या रे॥4॥

दर्शन की भीख

(१२३)

घनश्याम तुम्हारे द्वारे पर एक दरश भिखारी आया है।
दो नयन कटोरों में आँसू भर भेंट चढ़ाने आया है॥टेर॥
चलो श्याम चलो बाजे नुपुर ध्वनी,
एक ताल पै बाँसुरिया गूँजे।
मन भावना रूपी गोपिन नें, हृद धाम में रास रचाया है॥1॥
मन प्रेम के सुन्दर मंडप में, दिन रात जुगल जोड़ी झूले।
घनश्याम तुम्हारे झूलन को, एक सुन्दर बाग लगाया है॥2॥
मैं तुममें बसूँ तुम मुझमें बसो, पूरन हो भगत की अभिलाषा।
तुम एक अनेक हो मनमोहन, जंजाल से जग भरमाया है॥3॥

सत्संगी भाई-बहनों से राम-राम

(१२४)

जो भी पधारे सतसंगमें जी, संताँ राम-राम जी, भगताँ० ॥
बार-बार सबको प्रणाम, घनाँ-घनाँ राम-राम जी ॥1 ॥
मातावाँ बहना भाइयाँ जी, सबनें राम-राम जी।
करौ मिल हरि गुन-गान, घनाँ-घनाँ राम-राम जी ॥2 ॥
संत विराजै जिस देस में जी, भगताँ राम-राम जी।
भयो वौ तो तीरथ धाम, घनाँ-घनाँ राम-राम जी ॥3 ॥
सेवा में कोई त्रुटि रही तो, संताँ राम-राम जी, भगताँ ॥
भूल-चूक करौ माफ, घनाँ-घनाँ राम-राम जी ॥4 ॥

कृतज्ञतापूर्वक नमन

(१२५)

हरि का नाम जपानेवाले, गीता पाठ पढ़ानेवाले,
गीता रहस्य बतानेवाले, जग की चाह छुड़ानेवाले,
प्रभु से समँद जुड़ानेवाले, प्रभु की याद दिलानेवाले,
तुमको लाखौं परणाम ॥टेर ॥
जग में महापुरुष नहिं होते, प्राणी सिसक-सिसक कर रोते।
आँसु पोंछनेवाले, सबका आँसु पोंछनेवाले,
सबकी पीड़ा हरनेवाले, सबकी जलन मिटानेवाले,
सबको गले लगाने वाले, तुमको लाखौं परणाम ॥1 ॥
जनम-मरण दुख से दुखियारे, भटक रहे हैं लोग विचारे।
पथ दरशानेवाले, हमको पथ दरशानेवाले,
सत का मार्ग दिखानेवाले, सत का संग करानेवाले,
हरि के सनमुख करनेवाले, तुमको लाखौं परणाम ॥2 ॥
ऊँच नीच जो भी नर-नारी, अमरलोक के सब अधिकारी।
संशय हरनेवाले, सबका संशय हरनेवाले,
सबका भव-दु:ख हरनेवाले, सबकी चिन्ता हरनेवाले,

सबको आसिस देनेवाले, तुमको लाखौं परणाम ॥3 ॥
हम तो मूरख नहीं समझते, संतन का आदर नहिं करते।
नित समझानेवाले, हमको नित समझानेवाले,
हमसे नहिं उकतानेवाले, हम पर क्रोध न करनेवाले,
हम पर किरपा करनेवाले, तुमको लाखौं परणाम ॥4 ॥
अब तो भव सागर से तारौ, शरण पड़े हम बेगि उबारौ।
पार लगानेवाले, हमको पार लगानेवाले,
हमको पवित्र करनेवाले, हम पर करुणा करनेवाले,
हमको अपना कहनेवाले, तुमको लाखौं परणाम ॥5 ॥

(१२६)

नमस्कार प्रभु बारंबारा।
असंख्य कौटि ब्रह्माण्ड के स्वामी, जड़ चेतन सब रूप तुम्हारा ॥1 ॥
तुम हो सबमें सब तेरे में, धन्य सगुन प्रभु रूप तुम्हारा ॥2 ॥
ना तुम किसमें ना तेरे में, धन्य है निरगुण रूप तुम्हारा ॥3 ॥
राम कृष्ण ओंकार हरी हर, वेदों में तेरा नाम अपारा ॥4 ॥
बाहर भीतर ऊपर नीचे, जहँ देखूँ तहँ रूप तुम्हारा ॥5 ॥
भक्ति अनन्य करै जो कोई, तब दरशन हो नाथ तुम्हारा ॥6 ॥
शरण पड़ा हूँ हृदय लगा लो, सिर पर धर दो हाथ तुम्हारा ॥7 ॥

===::0::===